||ओ३म्||

वैदिक-पथ

मासिक

स्मृ० श्री घूडमल आर्य

स्मृ० श्री प्रहलाद आर्य

वेदोक्त विश्व मानवीय सम्वेदनाओं का संवाहक

वर्ष- ९ : अंक-११

सृष्टिसंवत्-१,९७,२९,४९,११८

विक्रम-संवत् : २०७४

जून, २०१७

दयानन्दाब्द-१९३

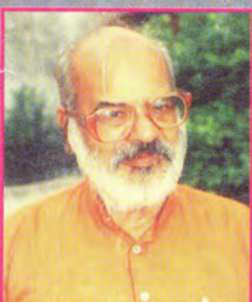

आद्यसम्पादक :

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती (स्मृतिशेष) .

प्रकाशक :

श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास

हिण्डौन सिटी-३२२ २३०

चल० : ०९४१४०३४०७२

०९८८७४५२९५९

एक प्रति : १५.०० रु०

Email-aryaprabhakar@yahoo.com

स्मृतिशेष सुमनजी

धर्मपत्नी-श्री सुरेशचन्द्रजी अग्रवाल

श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास का मुखपत्र

वैदिक पथ

धार्मिक, सामाजिक, मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष-९, अंक-११

सृष्टिसंवत्-

१,९७,२९,४९,११८

विक्रम-सम्वत्-२०७४

जून, २०१७

दयानन्दाब्द-१९३

हिण्डौन सिटी, पृष्ठ-४८

आद्यसम्पादक :

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती (स्मृतिशेष)

प्रधान सम्पादक :
(अवैतनिक)

डॉ० ज्वलन्तकुमार शास्त्री

सम्पादक :

प्रभाकरदेव आर्य

संयुक्त सम्पादक :

महात्मा आर्यमुनि वानप्रस्थ

स्वत्त्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रभाकरदेव आर्य के लिए वर्द्धमान ऑफसेट प्रिन्टर्स, एच-७७, इण्डस्ट्रियल एरिया, हिण्डौन सिटी (करौली) में मुद्रित एवं श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास ब्यानिया पाडा, हिण्डौन सिटी (राज०) से प्रकाशित।

चल० : ०९४१४०३४०७२, ०९८८७४५२९५९

सम्पादक—**प्रभाकरदेव आर्य**

पंचवार्षिक शुल्क : ८०० रु०

आजीवन शुल्क : २१०० रु०

एक प्रति : १५ रु०

Email-aryaprabhakar@yahoo.com

अनुक्रम

सम्पादकीयम् २

—डॉ० ज्वलन्तकुमार शास्त्री

समाचार-पथ ६

वेद-प्रवचन ९

—पं० श्रीगंगाप्रसाद उपाध्याय

शाकाहार : मानवीय-आहार १५

—डॉ० स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती

गोहत्या, मांसाहार और तर्क २७

—डॉ० वेदप्रताप वैदिक

मांसाहार से संभावित खतरे ३०

जाति मिटे तो गरीबी हटे ३२

—वेदप्रताप वैदिक

न्यास द्वारा प्रकाशित तथा उपलब्ध पुस्तकें ४१

नोट : इस अंक में प्रकाशित लेख, कविता व अन्य सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस सम्बन्ध में सीधे लेखक से सम्पर्क करें।

सम्पादकीयम्—

इस्लामिक स्टेट की उग्रवादी विचारधारा और कश्मीर

दिनोदिन बढ़ती कश्मीर-समस्या को ठीक से समझने की जरुरत है। जो लोग यह समझते हैं कि कश्मीर घाटी के पत्थरबाज लड़के और उनके आका कश्मीरियत, इन्सानियत और जम्हूरियत के लिए लड़ रहे हैं उनको घाटी की वस्तुस्थिति का बोध नहीं है। इस्लाम के अनेक रूप हैं। इनमें सबसे उग्रवादी गुट या विचारधारा का सम्बन्ध **सलफी वहाबी इस्लाम** से है। पाकिस्तान का निर्माण करनेवाले सिर्फ द्विराष्ट्रवाद के पैरोकार नहीं थे अपितु सम्पूर्ण विश्व और मानवजाति को इस्लामी और गैर-इस्लामी भागों में विभाजित करके देखने के आदी थे। इसी नजरिये से पाकिस्तान का निर्माण किया गया। पाकिस्तान के हुक्मरान पहले दिन से खुद को मोहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी और मुगल आक्रान्ताओं का उत्तराधिकारी मानते रहे और उन्हीं की तरह मध्य एशिया से सिन्धु नदी तक एक इस्लामी राज्य बनाकर भारत में फिर से प्रवेश की योजना बनाते रहे हैं। इसी योजना के तहत कश्मीर में **सलफी बहाबी इस्लाम** के प्रचार के लिए अरब जगत् से खूब पैसा भेजा गया और पाकिस्तान ने इसे लपककर कश्मीर में इस्लामी कट्टरपंथ को खूब हवा दी। इसके लिए **वहाबी सलफी मस्जिदों और मदरसों** का पूरा नेटवर्क खड़ा किया गया। फलतः इस्लामिक कट्टरपंथी प्रचार से उपजे घृणाबोध के साथ बड़े हुए कश्मीरी लड़के अगर बगदादी की तरह एक मध्ययुगीन इस्लामिक राज्य की स्थापना का सपना देखनेवाले बुरहान वानी के समर्थन में पत्थर उठा रहे हैं तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? यह तो होना ही था। पाकिस्तान से होनेवाली आतंकी घुसपैठ को रोकने के लिए हम सीमा पर बाड़ लगा रहे हैं, मात्र इससे बात बनने वाली नहीं है। कश्मीर में उग्रवादी कट्टर इस्लाम की सलफी वहाबी विचारधारा के प्रसार के लिए पाकिस्तान और खाड़ी देशों से आ रहे पैसे के प्रवाह को हमें रोकना होगा।

इस्लामी वहाबी-सलफी विचारधारा ही इस्लामिक स्टेट (आइएस) का समर्थन करती है। इसी कारण ब्रिटेन के कट्टरपंथी इस्लामी उपदेशक शेख अंजुम चौधरी जो वहाबी-सलफी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, को ब्रिटिश अदालत ने इस्लामिक स्टेट का समर्थन करने के जुर्म में दोषी करार दिया है। अंजुम चौधरी और उनके साथियों ने न केवल

आइएस का समर्थन ही किया अपितु दुनिया भर के मुसलमानों को गुमराह करने की भी कोशिश की और खुद भी एक चरमपंथी इस्लामी संगठन कायम किया।

भारत में शरीयत कानून लागू करने का आह्वान करने वाली पहली इस्लामी वेबसाइट के संस्थापक अंजुम चौधरी ही हैं। हाल ही में प्रतिबंधित होने वाली उनकी वेबसाइट का लक्ष्य हमारे लोकतान्त्रिक और उदारवादी देश में शरीयत के नाम पर इस्लामिक साम्राज्य का गठन करना था। अंजुम चौधरी, जो कि इस वेबसाइट पर अपने आपको शरीयत की अदालत का प्रबंधक करार देते रहे, अपने फ़तवे में लिखते हैं कि इस्लाम सेक्युलरिज्म की आज्ञा नहीं देता और इसके अनुसार गैर-मुस्लिम शासक मुसलमानों पर हुकूमत नहीं कर सकते। भारतीय उपमहाद्वीप को उसके 'गौरवशाली इस्लामिक शासन' के दिनों तक लौटाने के लिए शरीयत लगाना आवश्यक है। चौधरी का मानना है कि भारतीय मुसलमानों को चुनाव का बहिष्कार करना चाहिए और शरीयत का नारा लगाना चाहिए। चौधरी की धार्मिक अराजकता और कट्टरता का सबसे ज्यादा अपमानजनक पहलू यह है कि वह खुलकर कहते रहे हैं कि इस्लाम शान्ति का धर्म नहीं है। तथाकथित इस्लामी खलीफा अबू बकर अल-बगदादी ने भी यह कहा था कि इस्लाम कभी भी शांति का धर्म नहीं रहा है, बल्कि यह स्थायी रूप से जंग का मजहब रहा है।

इसी खतरनाक सोच के चलते बगदादी अपनी जमात में मुस्लिम युवाओं को भर्त्ती करने में सफल रहा। आखिर १०० देशों से एक ही साल के भीतर ३०,००० तीस हजार मुसलमान इराक और सीरिया में बगदादी की खलीफाई इस्लामिक स्टेट के लिए कैसे पहुँच गये?

केरल के इस्लाम कबूल करने वाले याहिया (जो पहले ईसाई था) ने अपने २१ साथियों के साथ देश छोड़ कर आईएसआईएस के अफगानिस्तान में सक्रिय संगठन से जुड़ गया। वह काफी लम्बे समय से एक अंग्रेजी अखबार को चिट्ठियाँ भेजता रहा है। उसने अपनी चिट्ठियों में लिखा है कि वह खुदाई मज़हब (ईश्वरीय धर्म) के लिए अपने को कुर्बान कर रहा है। याहिया ने आगे लिखा है—'जेहाद बाजार का एक सौदा है अल्लाह के साथ, एक ऐसा सौदा जिसमें हम अपना जीवन और पूंजी अल्लाह को देकर बदले में जन्नत हासिल करते हैं। कितना फायदे का सौदा है। याहिया क़ुरआन के उस आयत **(मं० २, सि० ११, अल तौबा सूरा ९, आयत १११)** को उद्धृत कर रहा था जिसमें कहा गया है, अल्लाह ने इस्लाम

में विश्वास करने वालों से उनका जींवन और उनकी संपत्ति खरीद ली है और बदले में उन्हें जन्नत देने का वादा किया है। इसलिए हम अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं और या तो मारते हैं या मर जाते हैं।'

याहिया ने क़ुरआन के जिस आयत को उद्धृत किया है, ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में वह आयत मौजूद है। १४वें समुल्लास की ८८वीं समीक्षा में इस आयत को उद्धृत कर स्वामीजी लिखते हैं—**'वाह खुदा जी! आपने अच्छी सौदागरी लगाई कि मुसलमानों के हाथ से अन्य गरीबों के प्राण लेना ही लाभ समझा और उन अनाथों को मरवा कर उन निर्दयी मनुष्यों को स्वर्ग देने से दया और न्याय से मुसलमानों का खुदा हाथ धो बैठा और अपनी खुदाई में बट्टा लगा के बुद्धिमान् धार्मिकों में घृणित हो गया।'** पाकिस्तान के जाने-माने पत्रकार आरिफ जमाल ने अपनी किताब **'द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ जेहाद इन कश्मीर'** में करीब ६०० जेहादियों के अंतिम पत्रों का अध्ययन करके लिखा कि 'शायद ही कोई पत्र हो जिसमें जिहाद में मरने के बाद इनाम स्वरूप जन्नत में मिलने वाली ७२ हूरों का जिक्र न हो।' मरते वक्त इसका उल्लेख यह बताता है कि जन्नत की हूरें उनका मुख्य आकर्षण होती है। दुनिया के जाने-माने इस्लाम के स्कॉलर शेख जब्रिल हद्दाद, जिन्हें परंपरागत इस्लाम का सबसे बड़ा जानकार माना जाता है, ने सन् २००५ में एक फतवा जारी करके अल्लाह के नाम पर शहीद हुए लोगों के लिए जन्नत में मिलने वाली छः नियामतों का जिक्र किया है उनमें से पाँचवीं ७२ हूरों के उपलब्ध होने की तस्दीक करता है। जम्मू क्षेत्र के नगरोटा आर्मी कैंप में पिछले २९ नवम्बर को हुए आतंकी हमले में मरे फिदाईन के पास से सामान में एक असाल्ट राइफल और कुछ कारतूस के अलावा जो चीज मिली, वह थी सस्ते इत्र की एक बोतल। तमाम पिछले सबूतों के आधार पर पाया गया कि फिदाईन जान देने से पहले नहाता है फिर दूल्हे की तरह श्रृंगार करता है, आँखों में काजल लगाता है और शरीर पर इत्र। इसका आशय यह है कि ऐसे फिदाईन की यह मान्यता होती है कि जब वह मरने के बाद जन्नत के दरवाजे पर पहुँचे तो वहाँ हूरों को उसके शरीर से खुशबू आए और वह खुबसूरत दिखे।

इस्लाम का यह विद्रूप चेहरा आईएसआईएस के रूप में उभरा है। पाकिस्तान में रह रहे विभिन्न आतंकी संगठनों से जुड़े आतंकी भारत में कश्मीर के रास्ते इसीलिए घुसपैठ कर रहे हैं और उनको घाटी में रह रहे इन्हीं उग्रवादी इस्लामिक इरादों वाली सलफी वहाबी तत्त्वों की मदद मिल

रही है, अन्यथा आतंकी घुसपैठियों को इन कश्मीरियों से सुरक्षा कवच क्यों प्राप्त होती है? आतंकियों को छिपे हुए स्थान में घेर कर भारतीय सुरक्षा बल जब अपना आप्रेशन चलाते हैं, तब आतंकियों को सुरक्षा-कवच देते हुये सुरक्षा बल के सैनिकों पर पत्थरबाजी शुरू हो जाती है। ऐसी विकट समस्या का समाधान इतना आसान नहीं है जितना अपने को धर्मनिरपेक्ष मानने वाले मणिशंकर अय्यर जैसे नेता समझते हैं। कश्मीर के अलगाववादी नेताओं द्वारा कश्मीरियत-इन्सानियत-जम्हूरियत की छलावाभरी बातें असली मुद्दे से भटकाने के लिए की जाती है।

जामिया मिलिया इस्लामिया में रिसर्च स्कॉलर और इस्लामी मामलों के जानकार **गुलाम रसूल देहलवी** का यह मानना है कि—'जब तक कट्टरता की इस वहाबी विचारधारा को मात देने के लिए मुसलमानों में एक सुधारवादी सोच को बढ़ावा नहीं दिया जाएगा और इसके लिए इस्लाम की आध्यात्मिक परंपराओं की समृद्ध विरासत को उजागर नहीं किया जाएगा तब तक इस परिस्थिति में कोई बदलाव संभव नहीं होगा। दूसरे शब्दों में जब तक यह कट्टरपंथी तेवर नहीं बदलेगा, दुनिया भर में इस्लाम को आतंकवाद से जोड़कर देखा जाता रहेगा। भारत में इस्लाम की इस धारा में उतनी कट्टरता नहीं है जितनी मुस्लिम देशों में है, परन्तु यह इस्लाम की उदारवादी सोच को आगे बढ़ाने में बाधा है। इस प्रक्रिया में मदद करने के लिए चिंतित मुसलमानों को इस्लामी आध्यात्मिकता, शांति और बहुलवाद पर आधारित एक व्याख्या तैयार करनी होगी और इसको लेकर भारतीय मुसलमानों तक पहुँच बनानी होगी।..... भारतीय इस्लामी विद्वानों को और खासकर वहाबी-सलफी मदरसों से पढ़े हुए उलमा को तकरीबन पूरे इस्लामी पाठ्यक्रम का निष्पक्ष रूप से जायजा लेना होगा। चाहे पाकिस्तान हो या सऊदी अरब, सीरिया हो या इराक, नाइजीरिया हो या मिस्त्र, ये सभी मुस्लिम देश आज की तारीख में इसी रुढिवादी धार्मिक पाठ्यक्रम की कट्टरता से त्रस्त हैं। यही कारण है कि मिस्त्र की नई सरकार ने सैयद कुतुब, हसन अल-बन्ना, शेख यूसुफ अल-करजावी और मुस्लिम ब्रदरहुड के अन्य सभी वैचारिक निर्माताओं की किताबों पर प्रतिबंध लगा दिया है। एक उर्दू दैनिक के अनुसार मिस्त्र के अधिकारियों ने बताया है कि हम देश भर में सभी मस्जिदों और पुस्तकालयों से मुस्लिम ब्रदरहुड की किताबों को हटाने की योजना बना रहे हैं।

—डॉ० ज्वलन्तकुमार

चलभाष-९४१५१८५५२१

स्कूल के रजिस्टर में जाति और धर्म का उल्लेख क्यों होना चाहिए

बीड़ के सातवीं के १३ वर्षीय छात्र के इस सवाल पर क्लास टीचर भी अवाक रह गए—मराठवाड़ा के बीड़ जिले के आष्टी तहसील के पारगांव जोगेश्वरी जिला परिषद् स्कूल का सातवीं कक्षा का १३ वर्षीय छात्र रोहन भोसले इन दिनों पूरे सूबे में चर्चा का विषय बनता जा रहा है। इतनी कम उम्र में उसने कुछ ऐसा किया है। जिसका खुलासा होने के बाद स्कूल के शिक्षकों ने कहा, 'रोहन, आई एम प्राउड ऑफ यू।'

पारगांव जोगेश्वरी जिला परिषद् स्कूल के शिक्षक सोमनाथ वालके ने बताया, 'मैं नये साल के पहले दिन २ जनवरी को जब छात्रों की उपस्थिति ले रहा था, तब मैंने देखा कि १३ क्रमांक पर दो स्थानों पर किसी ने स्कैच पेन से कुछ मिटा दिया था। इस पर मैंने आवाज कड़ी करते हुये छात्रों से पूछा कि हाजिरी किसने ली थी? उपस्थित छात्रों ने जवाब दिया, सर रोहन ने। मैंने रोहन से पूछा कि उसके नाम के आगे स्कैच पेन से काट-पीट किसने की है?' रोहन ने कहा, 'सर, मैंने ही किया है। आप ठीक से देखें मैंने सिर्फ अपने धर्म और जाति को मिटाया है। क्योंकि आप ही सिखाते हैं कि पृथ्वी पर सिर्फ एक ही जाति व धर्म है और वह मानवता का है। इसलिए स्कूल के रजिस्टर पर हमारी जाति और धर्म का उल्लेख क्यों होना चाहिए?'

शिवाजी महाराज पर एक किताब से मिली प्रेरणा—बाद में रोहन भोसले ने कहा—मेरे शिक्षक वालके सर हमें सिखाते थे कि सभी की जाति-धर्म सिर्फ मानवता है। स्कूल की लाइब्रेरी में मुझे शिवाजी महाराज और बाबासाहेब आंबेडकर से संबंधित छोटी-छोटी किताबें पढ़ने को मिली। एक दिन मैं जब स्कूल में शिवाजी महाराज पर एक किताब पढ़ रहा था। तब मुझे उसमें किसी भी सैनिक व व्यक्ति की जाति लिखी हुई नहीं मिली। तब ही मेरे मन में ख्याल आया कि स्कूल के रजिस्टर पर मेरी जाति क्यों लिखी हुई है। इसलिए मैंने अपनी जाति और धर्म को मिटा दिया। मेरी यह सोच सही साबित हो रही है क्योंकि अब मेरे शिक्षकों और दोस्तों का साथ मिल रहा है। मेरे सहपाठी भी जिद कर रहे हैं कि वे भी मेरी तरह स्कूल के रजिस्टर से अपनी जाति-धर्म को मिटा देंगे।

—९ जनवरी, २०१७, दैनिक भास्कर

अब दशनामी अखाड़ों में दलित भी बनेंगे नागा

दलितों सहित सभी जातियों को मिलेगा प्रवेश, संकीर्ण सोच से बाहर आए अखाड़े—नागा साधुओं के रहस्यमयी संसार में भी सामाजिक बदलाव के संकेत मिलने लगे हैं। टूट रहे सामाजिक ताने-बाने और धर्मांतरण पर नकेल कसने के मद्देनजर अखाड़ों ने तय किया है कि अर्द्धकुंभ प्रयाग में अबकी सभी दशनामी अखाड़ों में दलित भी नागा संन्यासी बन सकेंगे। अब तक सिर्फ पंचदशनाम जूना अखाड़े में ही दलितों सहित सभी जातियों को नागा दीक्षा दी जाती रही है, इस बार अर्द्धकुंभ के दौरान अन्य दशनामी अखाड़ों

में भी नागा दीक्षा के लिए दलित सहित सभी जातियों को प्रवेश दिया जाएगा। अखाड़ा परिषद् ने नागा संन्यासियों की संख्या में बढ़ोतरी करने के लिए यह निर्णय लिया है।

नई पहल के तहत अखाड़े जातीय बंधन से मुक्त होंगे। वर्ष २०१९ के प्रयाग अर्द्धकुंभ के दौरान जूना सहित सभी दशनामी अखाड़े दलितों को दीक्षा देकर नागा साधु बनाएंगे। इसके लिए बाकायदा सूची तैयारी की जा रही है। अखाड़ों के प्रादेशिक स्तर के पदाधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि अखाड़ों में शामिल होने वालों की सूची में बिना किसी भेदभाव सभी जाति के लोगों को शामिल किया जाए। महानिर्वाणी अखाड़े के सचिव श्रीमहंत रामसेवक गिरि का कहना है कि अखाड़े में अब तक सवर्ण जातियों को ही प्रवेश देने की परंपरा थी। समय की मांग है कि सभी जातियों को प्रवेश मिले।

अखाड़ों के नियम-परंपरा—आदि शंकराचार्य की ओर से स्थापित दशनामी अखाड़ों महानिर्वाणी, निरंजनी, आवाहन, आनंद, अटल आदि में अब तक सवर्णों को ही नागा दीक्षा दी जाती रही है। शंकराचार्य द्वारा बनाए नियमों की परंपरा के अनुपालन में दलितों को नागा दीक्षा नहीं दी जाती थी।

योग्यतानुसार पद भी मिलेंगे—'नर से नारायण' बनने की प्रक्रिया में परंपरानुसार पंचकेश संस्कार, विजया हवन के बाद आचार्य महामंडलेश्वर उन्हें मंत्र दीक्षा देंगे। अखाड़े के प्रबंधतंत्र में भी उन्हें शामिल करते हुए योग्यतानुसार पद भी दिए जाएंगे। जूना अखाड़े से इतर अन्य दशनामी अखाड़ों में सिर्फ सवर्ण जातियों को ही प्रवेश मिलता रहा है।

—१५ मई, २०१७, अमर उजाला

अंतरजातीय शादी करने पर मिली एक लाख की प्रोत्साहन राशि

अंतरजातीय विवाह करने पर बक्सर प्रखंड के कुल्हडियां गांव निवासी चंदन कुमार एवं पत्नी श्वेता कुमारी को प्रभारी डीएम मो० मोबिन अली अंसारी द्वारा शुक्रवार को प्रोत्साहन राशि प्रदान की गयी। सरकार की ओर से अंतरजातीय विवाह प्रोत्साहन योजना के तहत यह राशि सावधि जमा प्रमाणपत्र के रूप में दंपती को दी गयी। प्रभारी डीएम मो० मोबिन अली अंसारी ने कहा कि इस सराहनीय कदम से समाज में व्याप्त जाति-प्रथा की बुराई को समाप्त करने में निश्चित रूप से मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अंतरजातीय विवाह से समाज में छुआछूत खत्म होती है, साथ ही जाति प्रथा की भावना दूर होती है। उन्होंने कहा कि दहेज प्रथा पर भी इसका पूरा असर दिखाई देता है। सरकार ने अंतरजातीय विवाह करनेवाले लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए इस योजना को लागू की है। समाज भी ऐसे लोगों को प्रोत्साहित करे एवं इस योजना का लाभ लेने के लिए उन्हें प्रेरित करे। बता दें कि बक्सर सदर प्रखंड के बड़की कुल्हडियां गांव के रहनेवाले कुंदन कुमार ने इंजीनियरिंग किया है, दरभंगा में पोस्टिंग के दौरान रहमतगंज की रहनेवाली श्वेता कुमारी से प्यार हो गया। दोनों की जाति अलग-अलग होने की वजह से परिवारवालों ने शादी से इनकार कर दिया। तब जाकर दोनों ने २५ फरवरी २०१६ में बक्सर निबंधन कार्यालय में शादी कर लिया। इसके बाद उन्हें शुक्रवार को प्रोत्साहन राशि प्रदान की गयी। प्रभारी डीएम मो० मोबिन अली अंसारी ने बताया कि अंतरजातीय विवाह

योजना के तहत अब तक जिले में करीब आठ लोगों को प्रोत्साहन राशि दी गयी है, जिसमें वर्ष २०१६ में एक जोड़े को दिया गया था।

—६ मई, २०१७, प्रभात खबर (बिहार)

निर्मल बाबा के कार्यक्रम कहीं अंधविश्वास तो नहीं फैलाते

हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को केबिल टीवी नेटवर्क अधिनियम व नियम के तहत निर्मल बाबा के कार्यक्रमों का प्रसारण करने वाले टीवी चैनलों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करने के आदेश दिए हैं। कोर्ट ने नियमों का हवाला देते हुए केंद्र से कहा कि निर्मल बाबा के कार्यक्रम यदि इन नियमों की अवहेलना में दिखाए जा रहे हैं तो चैनलों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई होनी चाहिए।

जस्टिस एपी साही व जस्टिस संजय हरकौली की बेंच ने यह आदेश २०१२ में वकील के० सरन की ओर से दायर एक जनहित याचिका को निस्तारित करते हुए पारित किया। कोर्ट ने याची से आदेश की प्रति केंद्र सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को देने को कहा है। कहा गया है कि निर्मल बाबा के कार्यक्रम अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाले हैं। तर्क दिया गया कि ऐसे प्रसारण दिखाने वाले चैनलों के खिलाफ केबिल टीवी नेटवर्क रूल्स-१९९४ के नियम-६ के तहत भूत-प्रेत व अंधविश्वास को बढ़ावा देने पर चैनल चलाने के लिए दिया गया लाइसेंस रद्द हो सकता है। कार्यक्रम दिखाने वाले चैनलों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की गई। याची ने चैनल को विपक्षी पार्टी नहीं बनाया था, इसलिए किसी चैनल के खिलाफ आदेश जारी नहीं किया जा सकता है।

—४ मई, २०१७, दैनिक जागरण (लखनऊ)

बिना निवेश किए वाड्रा ने कमाए ५० करोड़

रॉबर्ड वाड्रा ने २००८ में बिना कोई निवेश किए एक जमीन सौदे से ५० करोड़ रुपये से ज्यादा का 'अवैध लाभ' कमाया था। हरियाणा में २० से ज्यादा संदिग्ध जमीन सौदों की जांच करने वाले एसएन ढींगरा आयोग ने अपनी रिपोर्ट में यह बात कही है। इन सौदों के बारे में कहा जाता है कि उन्हें वाड्रा या उनकी कंपनियों ने अंजाम दिया था। रिपोर्ट कहती है कि भूपिन्दर सिंह हुड्डा के नेतृत्व वाली तत्कालीन कांग्रेस सरकार और डीलरों के बीच मिलीभगत थी जिसका उद्देश्य वाड्रा की कंपनी स्काईलाइट हॉस्पिटालिटी को फायदा पहुंचाना था।

गुरुग्राम के चार गांवों में लैंड यूज बदलने के लिए जारी किए लाइसेंसों की जांच के लिए मई २०१५ में खट्टर सरकार ने आयोग का गठन किया था। रिपोर्ट से वाकिफ लोगों के हवाले से एक समाचार पत्र ने लिखा है कि आयोग ने ओंकारेश्वर प्रॉपर्टीज व स्काईलाइट और उसके बाद स्काईलाइट और डीएलएफ के बीच हुए लेन-देन की जांच की थी। स्काईलाइट ने जमीन ओंकारेश्वर प्रॉपर्टीज से खरीदी थी। स्काईलाइट को जमीन हस्तांतरित किए जाने के दौरान सेल डीड में भुगतान शून्य दिखाया गया। जमीन का लैंड यूज बदलने के बाद उसे डीएलएफ को बेच दिया गया, जिससे उन्हें करीब ५०.५ करोड़ रुपये का लाभ हुआ।

—२९ अप्रैल, २०१७, दैनिक जागरण (लखनऊ)

वेद-प्रवचन

—पं० श्रीगंगाप्रसाद उपाध्याय

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥

—ऋग्वेद १।२२।१९

अन्वय—(हे मनुष्याः! यूयम्) विष्णोः कर्माणि पश्यत। यतः व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा।

अर्थ—हे लोगो! **विष्णोः**=विष्णु के **कर्माणि**=कर्मों को **पश्यत**=देखो, **यतः**=जिन (कर्मों को) देखकर मनुष्य अपने **व्रतानि**=व्रतों को **पस्पशे**=पालन करने में सफल होता है। विष्णु **इन्द्रस्य**=इन्द्र का **युज्यः**=सबसे योग्य **सखा**=सखा या मित्र है।

व्याख्या—इस मन्त्र में परमेश्वर को 'विष्णु' शब्द से सम्बोधित किया है। महर्षि दयानन्द ने 'विष्णु' शब्द से ईश्वर के जिस गुण का भाव लिया है वह उनकी दी हुई शब्द-व्युत्पत्ति से प्रकाशित होता है। "(विष्लृ व्याप्तौ) इस धातु से 'नु' प्रत्यय होकर विष्णु शब्द सिद्ध हुआ है। **'वेवेष्टि व्याप्नोति चराऽचरं जगत् स विष्णुः'** चर और अचररूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम विष्णु है।"

आस्तिक्य की पहली भावना यह है कि ईश्वर सृष्टि-कर्त्ता है। सृष्टि-कर्त्ता का अर्थ है उन सब छोटी-बड़ी क्रियाओं का कर्त्ता जिनके कारण सृष्टि सृष्टि कहलाती है। जब हम कहते हैं कि पृथिवी को ईश्वर ने बनाया तो इसका अर्थ यह होता है कि परमाणुओं की पहली हलचल से, जिससे पृथिवी का बनना आरम्भ हुआ, लेकर उस क्रिया तक जब पृथिवी पूर्णरूप में तैयार हो गई और उसके पश्चात् वे सब प्रगतियाँ जिनके आश्रय से पृथिवी पृथिवी बनी हुई है, इन सब क्रियाओं का कर्त्ता परमेश्वर है। इसलिए संसार के प्रायः सभी आस्तिक-सम्प्रदाय ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता मानते हैं। परन्तु मनुष्य-कृत या प्राणि-कृत क्रियाओं के साथ एक सीमित भावना है। कुम्हार को हम घड़े का बनाने वाला कहते हैं। कारीगर को मकान का बनाने वाला कहते हैं। जुलाहे को कपड़े का बनाने वाला कहते हैं। चित्रकार चित्र का बनाने वाला कहलाता है। यहाँ कर्तृत्त्व केवल एक अन्तिम क्रिया का है, शेष का नहीं। एक सीमा तक बनी हुई मिट्टी को अन्तिम रूप दे देने का नाम ही घड़े को बनाना है। घड़े को बनाने से पहले मिट्टी किन-किन क्रियाओं का परिणाम थी अथवा घड़ा बनने के पीछे घड़े को घड़े के रूप में स्थित रखने के लिए किन रासायनिक क्रियाओं का नैरन्तर्य रहता है उससे कुम्हार का कोई सम्बन्ध नहीं, अतः कुम्हार का घड़े के साथ क्षणिक सम्बन्ध ही रहता है। इस उपमा के आधार पर कतिपय विचारकों ने यह धारणा बनाई है कि ईश्वर सृष्टि को बनाता

है, उसके भीतर रहता नहीं। सृष्टि में तो तुच्छ-से-तुच्छ और गन्दी-से-गन्दी चीजें शामिल हैं। क्या ईश्वर उन सब में चिपटा हुआ है? इसी आधार पर लोगों ने एक विशेष देवधाम की कल्पना की है। उसी का नाम बहिश्त, हैविन, स्वर्ग, गोलोक आदि रक्खा है। वहीं से बैठा-बैठा ईश्वर इस मर्त्यलोक की भी देखभाल करता है। बहिश्त पर विश्वास रखने वाले लोग यह तो नहीं मानते कि जहन्नुम या नरक में भी ईश्वर उसी प्रकार व्याप्त है जैसे बहिश्त या स्वर्ग में। विष्णु शब्द में जो भावना निहित है वह इस सीमित भावना का खण्डन करती है। ईश्वर को प्रत्येक क्रिया में समाविष्ट होना चाहिए। वेदान्तदर्शन में ब्रह्म को "**जन्माद्यस्य यतः**" लक्षण वाला लक्षित किया गया है अर्थात् ईश्वर वह है जिससे सृष्टि का सर्जन, पोषण और संहार होता है। सर्जन कोई अलग क्रिया नहीं है जो पोषण से अलग और भिन्न हो। सर्जन, पोषण और संहार के बीच में कोई भेदक भित्ति नहीं है। यह नहीं कह सकते कि सर्जन समाप्त हुआ अब पोषण आरम्भ होगा, या पोषण समाप्त हुआ अब संहार आरम्भ होगा। वस्तुतः यह सब अनन्त क्रियाओं का एक सदा चलने वाला प्रवाह है। मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि की कल्पना से अपनी ओर से सीमाएँ निर्धारित कर लेता है। जो क्रियाएँ दिन बनाती हैं वही रात बनाने का भी कारण हैं। सूर्य और पृथिवी तो निरन्तर चलते ही रहते हैं, कभी ठहरते नहीं। हम अपनी सीमित भाषा में कुछ को दिन और कुछ को रात कहते हैं। यदि हम पृथिवीलोक से बाहर कहीं जाकर खड़े हो सकें और वहाँ से पृथिवी को घूमती हुई देखें तो हम यह न कह सकेंगे कि अब दिन समाप्त हो गया, रात हो गई या रात समाप्त हो गई, दिन का आरम्भ है। इसी प्रकार जगत् की किस क्रिया को कहेंगे कि इसमें ईश्वर की आवश्यकता नहीं? वैदिक आस्तिकता की यह भावना बड़ी महत्त्वपूर्ण है। अणु-अणु और परमाणु-परमाणु में हर समय व्यापक होने के कारण ही हम ईश्वर को विष्णु कहते हैं। कोई विशेष विष्णुलोक नहीं। कण-कण और पत्ता-पत्ता विष्णुलोक है। चींटी का हृदय विष्णुलोक है। मच्छर का शरीर विष्णुलोक है। हाथी का शरीर विष्णुलोक है और मेरा तथा आपका तन भी विष्णुलोक है।

कुछ ब्रह्मवादियों ने ब्रह्म के कर्तृत्व का निषेध किया है। वे कहते हैं कि कर्तृत्व तो क्षुद्र प्राणियों की क्षुद्र इच्छाओं का परिणाम है। महान् ईश्वर तो क्रियाशून्य है। वह कर्म के बन्धन में नहीं आता। वह द्रष्टामात्र है, कर्त्ता नहीं। कर्त्ता और भोक्ता तो जीव हैं, ईश्वर नहीं।

यदि विचार से देखें तो यह युक्ति न केवल अवैदिक है अपितु सारहीन और हेत्वाभास भी। चेतन और जड़ में भेद ही यह है कि चेतन क्रियाशील होता है और जड़ क्रिया-शून्य। यदि ईश्वर भी क्रिया-शून्य हो तो वह जड़ हो जाए! यदि जड़ हो तो कर्त्ता न रहे और यदि कर्त्ता न

रहे तो ईश्वर न रहे अर्थात् जिस आधार पर हमारे मन में ईश्वर की भावना का प्रादुर्भाव हुआ था वह आधार ही न रहा तो ईश्वर की भावना भी न रही। इसको आप दूसरे ढंग से सोचिए, आपने घड़ी देखी। सोचा कि घड़ी बनी हुई वस्तु है। उसका कोई बनाने वाला अवश्य होगा। आपके ध्यान में आया कि इसका जो कोई बनाने वाला होगा उसको हम 'घड़ीसाज' कहेंगे। इस भावना के आधार पर आपने घड़ीसाज के सम्बन्ध में अनेक कल्पनाएँ कीं। इसका नाम आपने रखा 'घड़ीसाजी का साहित्य'। यदि अन्त में यह सिद्ध हो जाए कि जिसको हम घड़ीसाज कहते हैं उसका अस्तित्व तो अवश्य है परन्तु वह घड़ी का कर्त्ता नहीं हो सकता, केवल द्रष्टामात्र है, तो आपके विचारों को कितना आघात पहुँचेगा? 'घड़ीसाजी' का समस्त साहित्य अस्तव्यस्त हो जाएगा। जिस बुनियाद पर हमने आस्तिक्य-भावना या ईश्वरवाद का भवन बनाया था वही धड़ाम से आ गिरता है। इसीलिए स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर के अनेक गुण, कर्म और स्वभावों का परिगणन करते हुए अन्त में लिखा है कि 'ईश्वर सृष्टि-कर्त्ता' है। वेदान्त या उपनिषदों के लिए ईश्वर का कर्तृत्व अपरिचित भावना नहीं है। उपनिषद् कहती है—

यदा पश्यः पश्यति रुक्मवर्णं कर्त्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्।
तदा विद्वान् पुण्यपापे विधूय निरंजनः परमं साम्यमुपैति॥

यहाँ परमात्मा को 'कर्त्ता' बताया है।

जो लोग ईश्वर को कर्त्ता न मानकर द्रष्टामात्र मानते हैं वे 'दर्शन' के अर्थों को नहीं समझते। द्रष्टा का दृश्य पदार्थ से यदि केवल 'दर्शन' मात्र का ही सम्बन्ध हो तो दृश्य की अपेक्षा से द्रष्टा की आवश्यकता नहीं रहती। यदि मैं दृश्य ही हूँ तो लाखों मेरे देखने वाले क्यों न हों मुझे क्या? बिल्ली राजा को देखती है। यहाँ बिल्ली 'द्रष्टा' है। राजा 'दृश्य'। राजा पर बिल्ली का क्या प्रभाव है? अन्धा किसी को नहीं देखता। किसी का क्या बनता-बिगड़ता है? इसलिए केवल एक कल्पित सिद्धान्त की पुष्टि के लिए ईश्वर को 'द्रष्टा' मात्र मान बैठना ठीक नहीं है। वेद में 'विष्णोः कर्माणि' कहकर परमात्मा के कर्तृत्व को स्पष्ट कर दिया।

अब 'पश्यत' शब्द पर विचार कीजिए, यह 'दृश्' 'लोट्' धातु का मध्यम-पुरुष, बहुवचन है। 'पश्यत'=देखो। यहाँ 'पश्यत' का अर्थ केवल चक्षु-इन्द्रिय से देखनेमात्र का अर्थ नहीं है। 'दर्शन' का अर्थ है सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति। जब हम किसी कर्म को देखते हैं तो इस देखने के दो प्रकार हैं—एक स्थूल अर्थात् घटनामात्र को देखना, दूसरा उस नियम का ज्ञान प्राप्त करना जिसके अन्तर्गत वह घटना घटित हुई। इसको समझने के लिए एक साधारण घटना पर विचार कीजिए। कल्पना कीजिए कि आप अपने

घर के भीतर हैं। किसी ने आपके द्वार पर दस्तक दी। आपने नौकर को आदेश दिया, ''देखो कौन है?'' यदि नौकर मूर्ख है तो जाएगा, देखेगा और आकर उत्तर देगा ''एक आदमी है।'' उत्तर ठीक है। आपने कहा ''देखो।'' वह देख आया। परन्तु आप सन्तुष्ट नहीं हैं। बुद्धिमान् नौकर का उत्तर भिन्न होगा—''अमुक महाशय आये हैं। वह अमुक विषय पर आपसे बात करना चाहते हैं।'' वस्तुतः आपने जब 'देखो' कहा तो आपका तात्पर्य इस पिछले दर्शन से था। इसी प्रकार जब वेद का मुख्य आदेश है कि विष्णु के कर्मों को देखो तो वहाँ 'देखो' से तात्पर्य है सम्यक् ज्ञान प्राप्त करो। सेब वृक्ष से गिरता है। लाखों ऐसी घटना को देखते हैं। परन्तु न्यूटन का देखना देखना था। कौन ऐसा है जो विष्णु के कर्मों को नहीं देखता? कुत्ते, बिल्ली, भेड़-बकरी जिसके आँख हैं वह देखता है। साधारण मनुष्य की आँख के समक्ष विष्णु के बहुत-से काम आते हैं। सूर्य निकलता है, नदी बहती है, वृक्ष उगते हैं, बिजली कड़कती है, परन्तु ये तो घटनाएँ हैं। घटनाओं के देखने-मात्र का नाम ज्ञान नहीं है और न इनसे आस्तिक्य की भावना उत्पन्न होती है। घड़ी के देखने-मात्र से तो घड़ीसाज का ज्ञान नहीं होता और न उस देखने से कोई लाभ है। यदि आँख का काम केवल देखना-मात्र ही होता तो उस आँख से कोई लाभ न था। जो चौकीदार चोर को देखता-मात्र है और देखने के पश्चात् क्या काम करना चाहिए उसका ज्ञान नहीं रखता, उस चौकीदार से क्या लाभ? देखने का पूरा अर्थ समझाने के लिए ही मन्त्र का अगला भाग है। ''यतः व्रतानि पस्पशे।'' ''यतः'' जिनसे, 'जिनकी सहायता से।' 'किनकी?' 'उन कर्मों की' अर्थात् ''विष्णु ने उन कर्मों के सम्यक् ज्ञान की सहायता से।'' 'व्रतानि पस्पशे' ''मनुष्य अपने व्रतों का अनुष्ठान कर सके।'' मेरा विष्णु के कर्मों का देखना निरर्थक नहीं। इसमें मेरा ही स्वार्थ है। मैं अपने व्रतों का अनुष्ठान करना चाहता हूँ। इस अनुष्ठान के लिए विष्णु के कर्मों को देखना है।

'व्रत' का अर्थ है 'वर्तन', बर्ताव या कर्त्तव्यपालन। चेतन जीव होने के नाते मैं कुछ-न-कुछ तो करता ही रहता हूँ। 'कर्तुं, अकर्तुं, अन्यथा कर्तुम्'—करना, न करना, उलटा करना, ये तीन लक्षण हैं चेतन के। अकर्तुं भी एक क्रिया है, क्योंकि क्रया के प्रवाह को रोकना पड़ता है। बहते हुए जल की धारा को रोकने के लिए बाँध बाँधना भी तो क्रिया ही है। क्या कोई ऐसा चेतन भी है जो कभी कोई काम न करे? वह कोई-न-कोई काम अवश्य करेगा और उसका यह काम कर्त्तुं, अकर्तुं और अन्यथा कर्तुं की कोटियों के अन्तर्गत ही होगा परन्तु प्रत्येक क्रिया कर्त्तव्यता नहीं है। 'कृ' धातु में 'तव्य' या 'तव्यत्' प्रत्यय लगाने का एक विशेष हेतु है। 'कर्त्तव्य' वही है जिससे उद्देश्य की पूर्ति हो। कर्त्तव्य की पूर्ति तो विष्णु

के कर्मों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने से ही होगी। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अनुकरण करे अर्थात् जैसा काम किसी को करते देखे वैसा ही स्वयं भी करे। परन्तु अनुकरण और निर्वचन में भेद है। जो क्रिया केवल अनुकरण (Copy) के रूप में की जाती है वह कर्त्तव्य नहीं है, व्रत भी नहीं है। जब मैं बहुत-से कर्मों में से जिनका करना मेरे लिए सम्भव है या जिनके करने की मेरी प्रवृत्ति है, किसी एक कर्म का निर्वचन (छाँट करके) करके उसको करता हूँ तो वह व्रत कहलाता है। मेरे सामने टेढ़े-सीधे अनेक मार्ग हैं। मुझे अधिकार है कि मैं उन मार्गों में से किसी एक पर चल पड़ूँ, परिणाम भला हो या बुरा। यह अनुकरण तो है, निर्वचन का अंश न होने से यह व्रत नहीं है। व्रत वह होगा जिसको मैं केवल इसलिए न करूँगा कि दूसरे करते हैं, अपितु इसलिए कि कई मार्गों में कहा है—"**नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।**" परमपद की प्राप्ति के लिए कोई दूसरा मार्ग है ही नहीं, अतः विष्णु के सहस्रों कर्मों को देखकर उनका अनुकरण-मात्र करना नहीं, अपितु परिस्थिति को देखते हुए और अपनी मंजिल पर निगाह रखते हुए यह निर्वचन करना है कि मुझे यह मार्ग ठीक पड़ेगा। यही व्रत है। जो लोग केवल नेचर या कुदरत का अनुकरण करते हैं, वे भूल-भुलय्यों में पड़ जाते हैं। मनुष्य को अपने व्रतों का निश्चय करना है और विष्णु के कर्मों को देखकर उनसे शिक्षा लेनी है।

संसार के वैज्ञानिक लोग विष्णु के कर्मों अर्थात् कुदरत की घटनाओं का निरीक्षण करते और उनका अनुकरण करते हैं। मछली को तैरते देखकर उसी के शरीर के अनुकरणरूप में नौकाएँ बनाते हैं। पक्षियों को उड़ते देखकर उन्हीं के अनुकरणरूप में विमानों का निर्माण करते हैं। यह सब अनुकरण है और अनुकरण साइंस का आधारभूत है, परन्तु साइंस (Science) का मुख्य प्रयोजन तब सिद्ध होता है जब मनुष्य मछली या पक्षी के उद्देश्यों और मानव-जाति के उद्देश्यों में भेद करके नौका या विमानों का अपने लाभ के लिए प्रयोग करता है। वेदमन्त्र यह नहीं कहता कि विज्ञान नास्तिकता है या नास्तिकता का पोषक है। बहुत-से मतमतान्तर हैं जो प्राकृतिक नियमों के निरीक्षण या परीक्षण-मात्र को अनीश्वरवाद कहते हैं। अल्लाह के कामों में दखल मत दो। उसके भेदों को जानने की इच्छा मत करो। अल्लाह के भेद कौन जान सकता है। "खुदा की बातें खुदा ही ज़ाने।" कुदरत के पर्दे को फाड़कर उसके भीतर झाँकना ईश्वर को कुपित करना है। यही कारण है कि वैज्ञानिकों और ईश्वर के भक्तों में बहुत दिनों से युद्ध चला आता है। कहीं शीत-युद्ध (Cold war) और कहीं उष्ण-युद्ध आजकल भी है और पहले भी था। ऐसा प्रतीत होता है कि कुदरत के निरीक्षक और परीक्षक जो वैज्ञानिक हैं उनका एक अलग जत्था है और ईश्वर के मानने वाले, उसकी स्तुति करने वाले और उसकी

पूजा करने वाले जो धार्मिक लोग हैं उनका अलग जत्था है। वेदमन्त्र की भावना इसके विपरीत है। वेदमन्त्र का उपदेश है कि विष्णु के कर्मों को देखो, स्थूलकर्मों को, सूक्ष्मकर्मों को, बाह्यकर्मों को और आन्तरिक कर्मों को। छोटे कर्मों को और बड़े कर्मों को आँखें खोलकर देखो, परिश्रम करके देखो और बुद्धि की कसौटी पर कसकर देखो। उस समय पता चलेगा कि सृष्टि के मौलिक नियम वही हैं जो धर्म के हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि भौतिक जगत् के भी उसी प्रकार नियामक हैं जैसे आध्यात्मिक जगत् के। कुदरत का विरोध करके कोई ईश्वर-भक्त नहीं बन सकता। जैसे किसी राजा या शासक के कानून को भंग करके कोई उस शासक का भक्त नहीं बन सकता।

आप ईश्वर के कर्मों को क्यों देखें और क्यों उनका अनुकरण करें? इसका उत्तर मन्त्र के अन्तिम चरण में दिया है। "इन्द्रस्य युज्यः सखा।" विष्णु इन्द्र का सबसे योग्य सखा या मित्र है। 'इन्द्र' नाम है जीव का। 'इन्द्र' को जीव कहने में कुछ संकोच होता है क्योंकि 'इन्द्र' शब्द का उच्चारण करते ही हमको पौराणिक इन्द्र या शची का ध्यान आ जाता है। बहुत दिनों से सुनते-सुनते हमारे संस्कार ऐसे ही हो गये हैं। परन्तु 'इन्द्रिय' शब्द का प्रयोग तो बहुत पुराना है। आँख, कान, नाक आदि को 'इन्द्रिय' कहने में आप इतना संकोच नहीं करते। तथ्य यह है कि 'इन्द्रिय' शब्द ही 'इन्द्र' से बना है। 'इन्द्रिय' का अर्थ है इन्द्र वाली। पाणिनि महर्षि को भी इस भावना को दर्शाने के लिए एक सूत्र बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई "**इन्द्रियमिन्द्रलिंगम्**" इत्यादि (अष्टाध्यायी ५।२।९३)। काशिका इस सूत्र पर टिप्पणी देती है—"**रूढिरेषा चक्षुरादीनां करणानाम्। तथा च व्युत्पत्तेरनियमं दर्शयति—इन्द्रशब्दात् षष्ठी समर्थाल्लिंगमिन्द्रियम्। इन्द्र आत्मा स चक्षुरादिना करणेनानुमीयते नाकर्तृकं करणमस्ति**"। इससे स्पष्ट है कि काशिकाकार ने भी 'इन्द्र' का अर्थ जीवात्मा किया है। इन्द्र जिन करणों का प्रयोग करता है उन्हीं को इन्द्रिय कहा जाता है।

विष्णु इन्द्र का सखा है। परमेश्वर जीव का मित्र है। "युज्यः" अत्यन्त योग्य। ऐसा मित्र कोई दूसरा नहीं। विष्णु से अधिक निःस्वार्थ मित्र कौन होगा? उसकी हितैषिता तो प्रत्येक कर्म से प्रकट होती है। हम आँख का उपभोग और प्रयोग करते हैं। आँख हमारा करण है। परन्तु आँख बनाने वाला तो विष्णु ही है। उसने आँख हमारे हित के लिए ही बनाई है और आँख की सहायता के लिए सूर्य भी विष्णु महाराज की ही मित्रता का फल है। इसी प्रकार जहाँ तक आप विचार करेंगे संसार की प्रत्येक वस्तु से विष्णु भगवान् की मित्रता का प्रमाण मिलेगा। उसके अधिक मित्र कौन मिलेगा जिसके कर्मों को देखकर हम अपने व्रतों का ठीक-ठीक अनुष्ठान कर सकें।

शाकाहार : मानवीय-आहार

—डॉ० स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती 'कच्चाहारी'

समस्त प्राणियों को परमपिता परमात्मा अपनी न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत जन्म ही नहीं देता वरन् उनके आहार की भी व्यवस्था करता है। मानव उसकी अतिश्रेष्ठ कृति है, इसलिए उसके भोजन के लिए एक से बढ़कर एक उत्तम पदार्थों की रचना ईश्वर ने की है। अब यह मानव पर निर्भर करता है कि वह मूक व निरीह पशु-पक्षियों के चीत्कार भरे मांसाहार से कैंसर, हृदयरोग, रक्तचाप, डिप्रेशन आदि बीमारियों से स्वयं को जोड़ता है अथवा प्रकृति की देन विविध शाकाहार को अपनाता है। जिन आवश्यक तत्त्वों की शरीर को आवश्यकता है, सभी शाकाहार में पाये जाते हैं, जबकि मांस प्रोटीन का स्रोत है किन्तु उसके साथ शाकाहारी भोजन की आवश्यकता बनी रहती है। सामान्यतया मानव पका आहार ही लेता है, लेकिन अब कच्चाहार को विभिन्न प्रकार की बीमारियों के लिए उपयोगी माना जा रहा है।

कच्चाहार

मेरे मन में हमेशा यह उत्सुकता बनी रही कि कच्चाहार मानव के लिए कितना उपयोगी होता होगा? सामान्यतया लोग फलों को उसी रूप में खाते हैं तथा बहुत-सी सब्जियों को कच्चा ही आहार के रूप में लेना अच्छा माना जाता है। गेहूँ, चावल तथा अन्य अनाजों को अग्नि के ताप से खाने योग्य बनाया जाता है, इसी तरह सब्जियों को पकाने का प्रचलन है। दूसरी ओर अन्य प्राणी अपना भोजन कच्चा ही खाते हैं और वे स्वस्थ भी रहते हैं। मुझे लगता है कि कच्चाहार शरीर की क्षमता बढ़ाने में अधिक उपयोगी है।

मैंने १५ अक्टूबर १९६२ से अपने शरीर को कच्चा आहार की प्रयोगशाला बनाने का निर्णय लिया। एमबीबीएस तृतीय वर्ष के छात्र के इस निर्णय पर सहज ही विश्वास करना कठिन था, परन्तु लगन के पक्के इस ज्ञानप्रकाश ने २५ साल तक कच्चा आहार ही ग्रहण करने का व्रत लिया। इस प्रकार मेरे नाम के साथ 'कच्चाहारी' शब्द हमेशा को जुड़ गया है। इसे चिकित्सा विज्ञान के साथ उस समय जोड़ा, जब कच्चा आहार के बारे में लोगों को बहुत कम जागरूकता थी।

जहाँ तक मेरी जानकारी है सन् १९६३ में कच्चा आहार पर एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। इसके लेखक अर्शविर होवानैसियन जिन्हें एतेरहोव भी कहा जाता है, ईरानी थे। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद काफी लोकप्रिय हुआ। एतेरहोव के अनुसार पका आहार लेने के कारण ही मानव को विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ होती हैं क्योंकि भोजन को अग्निताप देने से उसके प्राकृतिक गुण समाप्त हो जाते हैं। ताप से यह एक

प्रकार से विषाक्त रूप ले लेता है। उन्होंने पोषक तत्त्वों से जुड़ी नई खोजों से भी असहमति व्यक्त की और स्पष्ट कहा कि कच्चा आहार जो प्रकृति की देन है, उसको ही लेना चाहिए। इससे मनुष्य स्वस्थ रहने के साथ ही दीर्घजीवी भी होगा।

हम अच्छी प्रकार जानते हैं कि मनुष्य जीभ का स्वाद आसानी से नहीं छोड़ सकता है। उसे गोलियाँ खाना व इञ्जैक्शन लगवाना अच्छा लगता है, अपेक्षाकृत कच्चा आहार के। यही कारण है कि आज फास्ट फूड, डिब्बाबन्द भोजन का प्रचलन तेजी से बढ़ता जा रहा है और वैज्ञानिक शोध सख्त चेतावनी देते आ रहे हैं कि इससे मोटापा बढ़ता है। यहीं से शुरुआत होती है लगभग सभी बीमारियों की। मेरा मानना है कि यदि लोगों की समझ में आ जाये कि कच्चा आहार ही सर्वोत्तम है, तब भूख की समस्या समाप्त हो जायेगी तथा दवाइयों पर जो भारी व्यय होता है, वह भी न्यून हो जायेगा।

माना जाता है कि फल अधिक गुणकारी होते हैं क्योंकि वे आग पर नहीं पकाये जाते हैं। हम अपने मरीजों को समझाते हैं कि आप लोग फलों की भाँति मूली, शलजम, गाजर, फूलगोभी, चुकन्दर, टमाटर, भिण्डी को कच्चा ही धीरे-धीरे चबाकर खा सकते हैं। साथ में पालक, काली मिर्च, हरी मिर्च का भी प्रयोग करना स्वास्थ्यवर्धक है।

हम कच्चा आहार के बारे में यह बताना नहीं भूलते हैं कि आजकल फलों व सब्जियों पर विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों का छिड़काव किया जाता है जिनका प्रभाव इन पर बना रहता है। इसलिए कच्चा आहार के लिए प्रयुक्त सामग्री को पहले साफ धोकर फिर कम-से-कम आधा घण्टा पानी में ही छोड़ देना चाहिए। यदि जैविक खेती के उत्पाद मिल जायें तो यह सबसे अच्छे हैं तथा इनके उपयोग से अस्वस्थ व्यक्ति की रिकवरी बड़ी तेजी से होती है।

युवतियाँ अक्सर अपनी त्वचा सम्बन्धी परेशानियों को लेकर मेरे पास आती हैं और मैं कहता हूँ कि **यदि कच्चा बथुआ जाड़ों में खाओ तो त्वचा के अनेक रोग होंगे ही नहीं।** इसी तरह मेथी के पत्तों को खाने से भी अनेक बीमारियों का बचाव ही नहीं होता है वरन् घुटनों, कमर का दर्द भी ठीक हो जाता है। जिसके शरीर में रक्त अल्पता हो वे चुकन्दर, पालक को खायें। अनार खाने से भी बड़ा फायदा होता है। कुल्था खाने से आयोडीन की अल्पता दूर हो जाती है और बहु-प्रचारित आयोडीन नमक से बचा जा सकता है।

ईश्वर ने प्रत्येक स्थान, ऋतु के अनुकूल फल, सब्जियाँ, अनाज, उत्पादित किये हैं, हमारा मानना है यही उसकी दया है। गर्मियों में मैदानी भागों में खूब लू चलती है और प्रभु ने ककड़ी, खरबूजा, तरबूज इन्हीं दिनों में पैदा किये हैं, जितनी लू चलेगी खरबूजा उतना ही मीठा होगा।

इसी तरह समुद्र के किनारे नारियल प्रचुर मात्रा में होता है। ठण्डे क्षेत्रों में अनेक प्रकार के मेवों की फसल उगती है किन्तु मानव की उपभोग की प्रवृत्ति की कोई सीमा नहीं है। जीभ ने जहाँ अपने लिए विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ बनाये, वहीं पशुओं के माँस को भी आहार बना लिया है।

एक कहावत है—'५६ प्रकार के पकवान'। अब जरा सोचिये कि यदि ये पकवान लाभप्रद होते तो मनुष्य बीमार क्यों पड़ता है? उसे नई-नई बीमारियों का सामना क्यों करना पड़ता है? ईश्वर तो सब जानते हैं, इसलिए उसने दया करके विभिन्न प्रकार की औषधीय जड़ी-बूटियाँ भी पैदा की हैं परन्तु उनके उपयोग का ज्ञान बहुत थोड़े लोगों को है। अब यदि मनुष्य कच्चा आहार ही लेता है तो वह प्रकृति के नजदीक हो जायेगा और उसका बचाव भी प्रकृति ही करेगी।

शाकाहार

अमरूद को मैं पेट का डॉक्टर मानता हूँ। पपीता, चीकू, अञ्जीर के प्रयोग की सलाह हम लगभग सभी मरीजों को देते हैं। मेरी यह भी हिदायत होती है कि **फल व दही दोपहर २ बजे के पश्चात् नहीं खाने चाहिए।** यद्यपि मेरा प्रिय भोजन 'चना' है। सोयाबीन को हम प्रोटीन का मुख्य स्रोत मानते हैं क्योंकि इसमें मांस से दुगुना प्रोटीन होता है। मेरा यह भी कहना है कि सभी दालों में प्रोटीन तो होता ही है, साथ में फाइबर भी विद्यमान रहता है जबकि मांस में फाइबर नहीं होता है, इसीलिए सर्वोत्तम 'शाकाहार' ही है।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति **बिल क्लिंटन** ५८ वर्ष की आयु में हृदय-रोग की चपेट में आ गये। उन्हें सभी आधुनिक चिकित्सा-सेवायें उपलब्ध कराई गईं। एंजियोप्लास्टी के बाद भी जब स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो उनके चिकित्सक डॉ० टी० कोलिन कैम्पवैल ने उन्हें कच्चा आहार दिया जिसके आश्चर्यजनक परिणाम सामने आये और **बिल क्लिंटन** ठीक हो गये। आहार को लेकर चिकित्सकों ने इससे पहले भी प्रयोग किये। डॉ० लैस्टर मॉरिसन व डॉ० जॉन गोफमैन ने भी पाया कि विशेष कच्चा आहार देने से हृदय रोगों पर जल्दी नियन्त्रण होता है। डॉ० ऑरनिश तथा डॉ० कॉडवैल एसिलस्टिन ने भी अपने अनुसन्धान में पाया कि विशेष आहार से रोगों पर नियन्त्रण किया जा सकता है।

हम किसी प्रकार के फूड सप्लीमेंट अथवा टॉनिक देने के पक्ष में नहीं हैं। मेरा साफ कहना है कि कम्पनियाँ विभिन्न विज्ञापनों के माध्यम से इतना आकर्षक प्रचार करती हैं कि मनुष्य उनके जाल में फँस जाते हैं। शरीर को आवश्यकतानुसार पोषक तत्त्व भोजन से मिल जाते हैं। नियमित रूप से कच्चा आहार लेना ही उचित है बजाय विभिन्न प्रकार के मिनरल्स या विटामिन्स खाने से। यह भी ठीक ज्ञात नहीं है कि औषधि

के रूप में लिये जाने वाले विटामिन्स को हमारा शरीर कितना शोषित करता है। दिलचस्प बात है कि एक शक्तिवर्धक दवा का विज्ञापन देने वाले क्रिकेट खिलाड़ी स्वयं ही कैन्सर की चपेट में आ गये। लोगों को यहीं से सबक लेना चाहिए। डॉ० टी० कोलिन कैम्पवैल अपने विशेष आहार को 'चाइना स्टडी डाइट प्लान' कहते हैं यानि 'होल फूड प्लांट बेस्ट डाइट प्लान'। इसका सीधा अर्थ है कि मांसाहार को पूरी तरह त्याग देना होगा। भारतीय जीवन पद्धति तो हमेशा शाकाहार को ही सर्वोत्तम मानती है।

मोटा अनाज जो गरीबों का भोजन माना जाता रहा है, समय बदला, आज साधन सम्पन्न रोगग्रस्त लोगों ने इन पर कब्जा कर लिया है। चना, मक्का, बाजरा, जौ तो हमेशा गुणकारी अनाज रहे हैं, लोगों को अब पता चल गया है कि ये विभिन्न बीमारियों में लाभप्रद हैं, इनकी माँग बढ़ गई। पर्वतों पर 'मडुवा' गरीबों का भोजन माना जाता था, जब मैं ताड़ीखेत आया तब यह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। अब इसके गुणों का पता चल गया है तो यह दुर्लभ हो गया है, यही हाल 'गहत की दाल' का है।

'योग' के सम्बन्ध में मेरा कहना है कि यह प्राचीन ऋषि-मुनियों की प्रणाली है, किसी बाजार की वस्तु नहीं। योग करना है तो पहले आहार शुद्ध करो, विचारों को पवित्र करो। भोजन में कच्चा आहार लेने से योग करोगे तो आध्यात्मिक शक्ति बढ़ेगी जिससे रोग स्वतः ही दूर हो जायेंगे। मांस, मदिरा, डिब्बाबन्द खाद्य पदार्थों से दूर रहना ही अच्छा है। आजकल इनका प्रचलन खूब हो रहा है, प्रश्न उठता है कि विश्व में सबसे अधिक हृदयरोगी भारत में ही क्यों हैं, डाइबिटीज तेजी से क्यों फैल रही है? व्यक्ति पूरी तरह कच्चा आहार नहीं ले सकता है इसलिए अधिक से अधिक कच्चा खायें, नियमित खायें, भूख से कम खायें तथा सर्वव्यापक से ध्यान लगा कर स्वयं को जोड़ें, जीवन का आनन्द प्राप्त होगा, मानव जीवन का लक्ष्य भी पूरा हो जायेगा।

"हे मनुष्यों! आप लोग ऐसा पुरुषार्थ करो जिससे पवित्रता, बुद्धि व चातुर्य बढ़े और जो **मांस-मद्य** के आहार का त्याग करके उत्तम पदार्थों का भोग करते हैं वे निरन्तर विज्ञान को बढ़ाते हैं।" (ऋग्वेद)

मानव के अन्दर करुणा है, विवेक है, ज्ञान है तथा अपने भावों को व्यक्त करने एवं विश्लेषण करने की क्षमता भी। किन्तु उसके अन्दर स्वयं के श्रेष्ठ होने का दम्भ भी विद्यमान है और यही मानव के विवेक पर आवरण ढक देता है। **मानवीय श्रेष्ठता** को परोपकार तथा अन्य जीवों से प्रेम में लगाना चाहिए, जबकि वही आज के समय में पशु-पक्षियों के जीवन के लिए मृत्यु का सन्देश बन गई है। लाखों की संख्या में मूक व निर्दोष जीव-जन्तुओं को मानव प्रतिदिन अपने उपभोग के लिए मार रहा है। वह वैज्ञानिकों के इस तथ्य को भूल ही गया कि सहारा रेगिस्तान कभी

हरा-भरा व जलयुक्त था, पशुओं के आखेट से ही वह मरुस्थल बना है।

प्रकृति ने प्रत्येक प्राणी के लिए आहार की व्यवस्था की है, जो जीव शाकाहारी हैं वे मांस नहीं खाते तथा जो मांसाहारी हैं, वे घास नहीं खाते हैं। शेर कभी घास नहीं खायेगा और गाय मांस पर मुँह नहीं लगायेगी। **ईश्वर ने मानव शरीर की रचना शाकाहारी के रूप में की है, मानव के दाँत, पञ्जे, आँतें आदि मांसाहारियों जैसे नहीं होते।** फिर भी मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो शाकाहार तथा मांसाहार दोनों का उपभोग करता है, उसने शायद ही किसी नभचर, जलचर अथवा थलचर को अपनी जीभ के स्वाद के लिए छोड़ा होगा। चूँकि उसके पास तर्कशक्ति है इसलिए वह मांसाहार तथा शाकाहार दोनों के पक्ष में बड़े-बड़े शोधों के साथ उनकी आवश्यकता को बताता आ रहा है। लेकिन इतना अवश्य कहा जायेगा **एक शाकाहारी को मांस की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं होती है, जबकि मांसाहारी का अनाज, सब्जी आदि के बिना काम नहीं चल सकता है।** फिर तो मानवों को यह मानना ही होगा कि उसके लिए शाकाहार ही उत्तम है।

मैडिकल साइंस की उन्नति के साथ ही बीमारियों का ग्राफ भी तेजी से बढ़ा है। हृदयरोग, ब्लडप्रेशर, शुगर, डिप्रेशन जैसे रोग अब आम हो गये हैं। कैंसर का प्रकोप भी तेजी से जड़ें जमा रहा है तो एड्स के खतरे से सभी वैज्ञानिक चिन्तित हैं। कभी स्वाइन फ्लू तो कभी इबोला जैसी नई-नई बीमारियाँ महामारी का रूप ले रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य को अपनी बुद्धि से विचार करना चाहिए कि यह बीमारियाँ श्रेष्ठ आहार 'शाकाहार' को छोड़ हिंसा से परिपूर्ण मांसाहार लेने के कारण तो नहीं हैं? आये दिन की बाढ़, सूखा, भूकम्प, सुनामी आदि पशुओं पर हो रहे अत्याचार का प्रतिफल तो नहीं हैं?

वैदिक दर्शन का सन्देश है—"**मा हिंस्यात् सर्वभूतानि**" अर्थात् किसी प्राणी की हिंसा मत करो। समय के परिवर्तनशील चक्र को क्या कहा जाये! आज यही देश मांस के निर्यात में अग्रणी है। मांस हेतु बड़ी संख्या में पशुओं के वध के कारण देश में दूध की कमी हो गई है, भारत ने दुनिया के पहले 'सिंथेटिक दूध उत्पादक देश' का तमगा हासिल किया है। मई २०१३ में रोम में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें लैटिन अमेरिका के आर्कबिशप होल्डर कामरा ने पशु-पक्षियों की हत्या पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुये इसे रोकने की अपील की। मनुस्मृति में साफ कहा गया है—"**यक्षरक्षः पिशाचान्नं मद्यं मांसं सुरासवम्**" (११।९५) मद्य, मांस तथा सुरा राक्षसी भोजन हैं।

जर्मन विद्वान् अल्डोफ जस्ट ने अपनी पुस्तक 'Return to Nature' में लिखा है—"Man, as I have said often enough, is essentially a fruit eater. Nuts, Berries, Roots, Orchard Fruits are his proper food according to

the order of nature." (मनुष्य, जैसा मैंने बहुधा बार-बार कहा फल खाने वाला है। प्रकृति के नियमानुसार नट्स, कन्द-मूल तथा बागों के फल उसका सही आहार है) दार्शनिक लियोनार्डो-दा-विन्सी ने स्पष्ट किया— **''यदि मनुष्य स्वतन्त्रता चाहता है, तब पक्षियों और जानवरों को पिंजड़ों में बन्द क्यों रखते हो।''** दुर्भाग्य यह रहा कि मध्ययुगीन सभ्यता में यह धारणा बलवती हो गई कि समस्त प्राणियों का अस्तित्व मनुष्य समाज के लिए है। इसी धारणा ने सह-अस्तित्व की भावना को समाप्त कर दिया तथा मनुष्य अपने आहार के लिए पशु-पक्षियों को मारने लगा, जो आज व्यापक रूप में फैल गया है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ० मदन मोहन बजाज, डॉ० अब्राहीम तथा डॉ० विजयराज सिंह ने रूस में आयोजित 'सूजीडोल अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन १९८५' में अपना शोध प्रस्तुत करते हुये कहा— ''पशुवध की क्रूरता से भूकम्प, सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। बीआईएस सिद्धान्त के अनुसार पशुवध के कारण 'आइन्सटीन पेनवेव्ज़' (NPW) वातावरण में काफी ऊर्जा निर्गत करती हैं।'' इन वैज्ञानिकों ने पाया कि ये तरंगे प्राकृतिक आपदाओं को लाती हैं। उनका यह भी निष्कर्ष है कि एक बूचड़खाना से १०४० मेगावाट तक 'पेनवेव्ज़' निकल सकती हैं। इस अध्ययन से यह बात समझ में आनी चाहिए कि भारत की संस्कृति हमेशा सह-अस्तित्व में विश्वास करती है इसीलिए यह उप-महाद्वीप अमेरिकी टोर्नाडो, जापानी सुनामी, इटालियन ज्वालामुखी से सुरक्षित रहा है। यहाँ मुगलों से पूर्व किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा का उल्लेख नहीं मिलता है, जबकि पिछले ३०० वर्षों में अनेक आपदाओं के साक्ष्य मौजूद हैं।

सहारा रेगिस्तान हमारे सम्मुख पशु क्रूरता का एक अनूठा उदाहरण है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ७००० से २००० ई० पूर्व सहारा न केवल हरा-भरा था बल्कि यह क्षेत्र झीलों से भरपूर था। यहाँ हाथी, गैंडे तथा विविध प्रकार के जानवर रहते थे। यहाँ के निवासियों का आखेट मुख्य काम था। माना जाता है कि उस समय यहाँ की आबादी २० लाख थी। सहारा की विभिन्न जाँचों से वैज्ञानिकों ने माना है कि यहाँ के निवासी कृषि कार्य से दूर थे, पशुवध चरम सीमा पर पहुँच गया। सम्भव है कि पेनवेव्ज़ के कारण यह मरुस्थल बन गया। क्या इसे पशुओं का अभिशाप माना जाये?

नेपाल में सन् २०१५ में भूकम्प आया। सोशल मीडिया पर लोगों ने एक प्रश्न उठाया! इस आपदा से पूर्व नेपाल के एक धार्मिक आयोजन में हजारों की संख्या में भैंसों की बलि दी गई, कहीं यह उनकी आह! का प्रतिफल तो नहीं है? आज विश्व में अशान्ति का वातावरण बनता जा रहा है, भौतिक सुविधाओं में वृद्धि के बावजूद लोगों में मानसिक

सकून नहीं, जगह-जगह प्राकृतिक आपदायें आती रहती हैं। **क्या मूक पशुओं की पीड़ा व आँसुओं को हम कभी समझने का प्रयास करेंगे?** उनके जीवन के महत्त्व को हमारी बुद्धि समझेगी!

२०वीं शताब्दी के महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन की बात पर मांसाहारियों को बार-बार विचार करना चाहिए—"Vegetarion food leaves a deep impression on our nature. If the whole world adopts vegetarianism, it can change the destiny of mankind." (शाकाहार हमारी प्रकृति पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। यदि विश्व शाकाहार अपना ले तो यह मानव जाति का भाग्य बदल सकता है) अंग्रेजी साहित्य के महान् लेखक जार्ज बर्नाड शॉ तो मांसभक्षियों को चलती हुई कब्र मानते हैं—"Meat eaters are like walking grave of slaughtered animals." महाकवि शैक्सपियर, पीबी शीले जहाँ शाकाहारी थे, वहीं सन्त मीरदाद का कहना है—"जो किसी जीवित प्राणी का मांस खाता है, उसे अपने मांस से इसको चुकता करना होगा।"

'**विश्व स्वास्थ्य संगठन**' द्वारा कराये गये विभिन्न शोधों में शाकाहार को मांसाहार की अपेक्षा अधिक स्वास्थ्यवर्द्धक व बीमारियों के प्रतिकूल माना गया है। संगठन की ओर से मांसाहार से होने वाली विभिन्न बीमारियों की सूची भी जारी की गई है जिनमें हृदयरोग, उच्च-रक्तचाप प्रमुख हैं।

गुर्दे की बीमारी का एक कारण अधिक प्रोटीन माना जाता है, जिसकी सम्भावना मांसाहार से बढ़ जाती है। सामान्यतया चिकित्सक हृदय, उच्च-रक्तचाप तथा किडनी के मरीजों को मांसाहार से दूर रहने की सलाह देते हैं, जबकि सब्जियाँ व फल इनमें गुणकारी हैं। अण्डे से एक्ज़ीमा तथा अन्य त्वचा रोगों की सम्भावना बढ़ जाती है, जबकि गो-मूत्र त्वचा सम्बन्धी विकारों की अच्छी चिकित्सा है।

डॉ० एलन बाकर ने मानव दाँतों की माइक्रोस्कोपिक जाँच के बाद कहा कि यह फलाहारी है। डॉ० ह्यूग ने अपनी विश्व विख्यात पुस्तक 'Diet and Food' में शाकाहार को शक्तिवर्द्धक माना है। जर्मनी के प्रो० एनरवर्ग ने स्पष्ट किया कि अण्डा ५१ प्रतिशत कफ का कारण है। डॉ० ऐमरी व डॉ० इन्हा ने माना कि अण्डे मानव के लिए विष हैं। इसी तरह डॉ० ओल्डफील्ड ने मांसाहार को बीमारियों के मुख्य कारणों में से एक माना है। आज चिकित्सक शाकाहार पर विशेष ध्यान देने लगे हैं। पश्चिमी जगत् में शाकाहारियों को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। प्रकृतिवादी कहते हैं—"जब प्रकृति नाना प्रकार के फल, सब्जियाँ, अनाज, दालें हमें दे रही हैं तो फिर मांसाहार के लिए किसी जीव की हत्या करना केवल वहशीपन, बर्बरता है।"

मांस खाना कितना हानिकारक तथा शाकाहार स्वास्थ्य के लिए कितना अनुकूल है, पाठक निम्न तालिका का अध्ययन करेंगे तो उन्हें लगेगा कि जीवहत्या का पाप करने से तो अच्छा है शाकाहारी भोजन किया जाये। गाय के मांस में अधिक प्रोटीन बताया जाता है इसलिए तालिका यहीं से प्रारम्भ की जा रही है—

वस्तु	प्रोटीन	कार्बोहाइड्रेड	फैट	फाइबर	खनिज लवण	कैलोरी
मांस						
गाय का मांस	२२.६	–	२.६	–	१.०	११४
सुअर का मांस	१८.७	–	४.४	–	१.०	११४
बकरे का मांस	२१.४	–	३.६	–	१.१	११८
भेड़ का मांस	१८.५	–	१३.३	–	१.३	१९४
अण्डे	१३.३	–	१३.३	–	१.०	१७३
दालें-अनाज						
सोयाबीन	४३.२	२०.९	१९.५	३.७	४.६	४३२
राजमा	२२.९	६०.६	१.३	४.८	३.२	३४६
उड़द	२४.०	५९.६	१.४	०.९	३.२	३४७
मूँग	२४.०	५६.७	१.३	४.१	३.५	३३४
लोबिया	२४.१	५४.५	१.०	३.८	३.२	३२३
अरहर	२२.३	५७.६	१.७	१.५	३.५	३३५
मसूर	२५.१	५९.०	०.७	०.७	२.१	३४३
चने की दाल	२०.८	६०.९	५.६	३.९	२.७	३६०
मोठ	२३.६	५६.५	१.१	४.५	३.५	३३०
चना	१७.१	६०.९	५.३	३.९	३.०	३६०
गेहूँ	१२.१	६९.४	१.७	१.९	२.७	३४१
बाजरा	११.६	६७.५	५.३	१.२	२.३	३६१
चावल	१३.५	४८.४	१६.२	४.३	६.६	३९३
मक्का	११.१	६६.२	३.६	२.७	१.५	३४२
मेवे						
बादाम	२०.८	१०.५	५८.९	१.७	२.९	६५५
मूँगफली	२६.२	२६.७	३९.८	३.१	२.५	५७०
काजू	२१.२	२२.३	४६.९	१.३	२.४	५९६
अखरोट	१५.६	११.०	६४.५	२.६	१.८	६८७

गोला	६.८	१८.४	६२.३	६.६	१.६	६६२
किशमिश	१.८	७४.६	०.३	१.१	२.०	३०८
चिलगोजा	१३.९	२९.०	४९.३	१.०	२.८	६१५
पिस्ता	१९.८	१६.१	५३.५	२.१	२.८	६२६
मुनक्का	२.७	७५.२	०.५	२.२	१.१	३१६

फल

खजूर	२.५	७५.८	०.४	३.९	२.१	३१७
आंवला	०.५	१३.७	०.१	३.४	०.५	५८
सेब	०.२	१३.४	०.५	१.०	०.३	५९
केला	१.२	२७.२	०.३	०.४	०.८	११६
अंगूर	१.०	१०.०	०.१	–	०.४	४५
अमरूद	०.९	११.२	०.३	५.२	०.७	५१
आम	०.६	१६.९	०.४	०.७	०.४	७४
अपीता	०.६	७.२	०.१	०.८	०.५	३२
संतरा	०.७	१०.९	०.२	०.३	०.३	४८
मौसमी	०.८	९.३	०.३	०.५	०.७	४३
नींबू	१.०	११.१	०.९	१.७	०.३	५७

सब्जियाँ

पालक	२.०	२.९	०.७	०.६	१.७	२६
मेथी पत्ते	४.४	६.०	०.९	१.१	१.५	४९
बथुआ	३.७	२.९	०.४	०.८	२.६	३०
भिण्डी	१.९	६.४	०.२	१.२	०.७	३५
गोभी	२.६	४.०	०.४	१.२	१.०	३०
बीन्स	७.४	२९.८	१.०	१.९	१.६	१५८
टमाटर	१.५	६.७	०.२	४.२	१.२	३५
आलू	१.६	२२.६	०.१	०.४	०.६	९७

दूध-दही

गाय का दूध	३.२	४.४	४.१	–	०.८	६७
भैंस का दूध	४.३	५.०	६.५	–	०.८	११७
दही	३.१	३.०	४.०	–	०.८	६०
मक्खन	–	–	८१.०	–	२.५	७२९
पनीर	२४.१	६.३	२५.१	–	४.२	३४८

मांस खाना व्यक्ति की अपनी इच्छा है, लेकिन कोई भी लगातार दोनों समय मांस नहीं खा पायेगा। मांस को कच्चा देखना भी आँखों को अच्छा नहीं लगता है। जहाँ यह बिकता है, वहाँ सामान्य व्यक्ति के लिए साँस लेना भी मुश्किल तथा टंगा हुआ मांस देखकर मन में घृणा भी होती है। आप कभी कटते हुये पशु को देखेंगे तो मन में बड़ी पीड़ा होगी। तड़पते हुये जानवरों की आँसू छलकाती लाल आँखें बार-बार पूछती हैं—"हे मानव! मेरा कसूर क्या था, मैंने तो आजीवन तेरी सेवा की, तुझे दूध पिलाया, मेरे उपकार का यह प्रतिफल?"

मुनिश्री तरुणसागर महाराज कहते हैं कि मांस खाने वाले कभी बूचड़खाने जाकर स्वयं की आँखों से देखें कि पशुओं को कितनी निर्ममता से मारा जाता है।

शाकाहारी भोजन में कितनी विविधता है—"आप कभी उड़द की दाल बना सकते हैं तो कभी राजमा, अरहर, मसूर, गहत, मोठ। मूँग को अंकुरित कर उसका प्रातः नींबू मिलाकर नाश्ता स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। सब्जियाँ इतनी हैं कि खूब बनाओ और खाओ। सबसे बड़ी विशेषता शाकाहार की यह है कि इनमें शरीर के लिए सभी आवश्यक खनिज-विटामिन्स मौजूद होतें हैं। शाकाहार हल्का होने से पाचन भी जल्दी हो जाता है। आजकल मिटामिनों की खूब चर्चा होती है, सब्जियाँ व फल इनसे भरपूर हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इनसे किसी तरह की जीवहत्या नहीं होती। प्रकृति जब इतनी विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ मानव को स्वास्थानुकूल भोजन के लिए उपलब्ध करा रही है तो मांस जैसी घृणित वस्तु का आहार क्यों?"

चिकित्सकों का कहना है कि शरीर के लिए 'फाइबर' यानि रेशे आवश्यक हैं। मांस में फाइबर होता ही नहीं। मांसाहारियों को इसके लिए सब्जियाँ तथा फलों की आवश्यकता बनी रहती है। सही अर्थों में मांसाहार केवल जीभ का स्वाद ही है, वह भी मसालों का। मांसाहारी जरा मसालों के बिना मांसाहार करके तो दिखायें! तर्क पर कसें, मांसाहारी को अन्न, फल, दूध, घी आदि खाद्य पदार्थों की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है, जबकि शाकाहारी को मांस की आवश्यकता कभी नहीं होती है। विभिन्न शोधों का बार-बार कहना है कि शाकाहार से अनेक घातक रोगों का बचाव भी होता है।

चिकित्सा विज्ञान की इतनी उन्नति के बाद भी **विभिन्न प्रकार की बीमारियों में लगातार वृद्धि क्यों? भारत तो हृदयरोग, उच्च रक्तचाप, डिप्रेशन, डाइबिटीज जैसे कभी ठीक न होने वाले रोगों का घर बन गया है।** कैंसर के रोगियों में पिछले २ सालों में जबरदस्त उछाल आया है। कहीं यह मूक पशुओं पर हो रहे अत्याचार एवं गर्भ में मारी जा रही

बेटियों की वेदना तरंगों (पेनवेव्ज़) का प्रतिफल तो नहीं? आज गरीब हो या अमीर, किसी न किसी रूप में चिकित्सा-समुदाय की लूट का शिकार बन रहे हैं। भारत, दवा उद्योग की मल्टीनेशनल कम्पनियों का मुनाफा अर्जित करने वाला देश बन गया है।

स्वस्थ व सुखी रहना प्रत्येक मानव की अभिलाषा होती है, लेकिन व्यवहार में देखा जाये तो ये दोनों ही किसी के पास नहीं। पिछले २ दशकों में जितना स्वास्थ्यवर्द्धक औषधियों का विकास हुआ, उतना ही मनुष्य विभिन्न बीमारियों से घिरता जा रहा है। भौतिक सुख के नये-नये आविष्कार हमारे सम्मुख हैं किन्तु मानव को सन्तुष्टि नहीं। गर्भावस्था व जन्म के साथ ही बच्चे का सम्बन्ध विभिन्न प्रकार के टीकों से जुड़ जाता है। भले ही हम मान लें कि बच्चे की प्रतिरोधक क्षमता इन टीकों से बढ़ जायेगी किन्तु इनका कुप्रभाव कब सामने आ जाये? कहना कठिन है। चेचक पर चिकित्सा विज्ञान ने पूर्ण नियन्त्रण कर लिया और हम देख रहे हैं कि एड्स की समस्या विकराल रूप में खड़ी हो गई। हमारे भोजन में विभिन्न रसायनों की इतनी मिलावट है कि स्वस्थ रहना ही कठिन हो गया है। जिन दवाओं को आज अच्छा माना जाता है, कुछ समय बाद उन्हीं पर प्रश्नचिह्न लग जाते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारियों की प्रचुरता के बाद भी मनुष्य स्वस्थ नहीं है! फिर वह सुखी कैसे रहे?

प्रकृति के अनुकूल चलने पर ही मानव स्वस्थ रह सकता है। लोग यह सोचकर खूब खाते हैं कि इससे स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, उन्हें धीरे-धीरे अनेक रोग घेर लेते हैं। मेरा सुझाव है कि कम भोजन करो, जो भी मिल जाये उसे आनन्द के साथ खाओ। दूसरों के प्रति ईर्ष्या का भाव मन में पैदा ही मत होने दो। परोपकार के अतिरिक्त प्रातः-सायं ध्यान लगाते रहोगे तो स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा, यही सुख भी है। हम उपवास को अच्छा मानते हैं। मेरा कहना है कि माह में कम से कम दो दिन उपवास रखना चाहिए, उस दिन सीमित मात्रा में फलाहार, उबली सब्जी व नींबू पानी ही लेना उचित है।

बादाम हृदय के लिए गुणकारी है, यह बात अभी एक अमेरिकी शोध में सामने आई। वास्तविकता यह है कि आयुर्वेद बादाम के विभिन्न गुणों से पहले से ही परिचित है। बादाम, मुनक्का व दखनी मिर्च की चटनी प्रातः-काल सेवन से हृदय को शक्ति देती है।

मनन-चिंतन कीजिए। प्राणीमात्र के शरीर की संरचना कितनी विचित्र है! ''हृदय अपने आप प्रतिक्षण कार्यरत रहता है, फेफड़े रक्त को शुद्ध करते हैं, गुर्दे शरीर की गन्दगी छानकर बाहर निकालते हैं, सब कुछ अपने आप। ठीक इसी तरह इस ब्रह्माण्ड का संचालन होता आ रहा है। जीव के लिए आहार की व्यवस्था, वृक्ष प्राणवायु भी देते हैं और फल-फूल

व औषधियाँ भी। इसके पीछे अदृश्य शक्ति कौन है? उसी अदृश्य शक्ति ने मानव को बुद्धि दी है जिसमें भाव पैदा होते हैं, इन्हीं पर नियन्त्रण कर लो, उस शक्ति में दृढ़ विश्वास रखो, मन को भटकने मत दो। सुख की प्राप्ति होने लगेगी फिर स्वास्थ्य स्वयं ही अच्छा हो जायेगा। परमात्मा निश्चय ही हमारे कार्यों का सदैव यथायोग्य फल देता है। उत्तम स्वास्थ्य का सम्बन्ध मानसिक प्रसन्नता से भी है। भौतिक वस्तुओं का अपने लिए यथोचित उपभोग के साथ-साथ दूसरे जरुरतमन्दों में वितरण करने वा दान देते रहने से मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है, और इस मानसिक प्रसन्नता की सुखानुभूति आपके उत्तम स्वास्थ्य के लिए भी अत्यावश्यक है।''

इसलिए मैं (डॉ० स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी) हमेशा जोर देकर कहता हूँ—''शाकाहारी भोजन से चित्त में सदाचार की प्रवृत्ति बढ़ती है, जिससे मानव नीरोग रहकर सदाबहार रहता है। अतः **मानवीय आहार शाकाहार ही है।''**

सम्पर्क—कच्चाहारी कुटी, पिथौरागढ़-२७२५०१ (उत्तराखण्ड)

पद्मश्री पूनम सूरी

आर्यजगत् के लिए यह गौरव का विषय है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्तृसमिति के माननीय प्रधान श्री पूनम सूरीजी महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा पद्मश्री के सम्मान से समलङ्कृत किये गये हैं। माननीय सूरीजी ने आर्य प्रादेशिक सभा तथा डी०ए०वी० संस्थाओं को एक नया आयाम दिया है-जिसमें आर्य सिद्धान्तों पर जोर दिया जा रहा है। दिवङ्गत आर्य संन्यासियों तथा विद्वानों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के प्रचार-प्रसार पर ध्यान दिया जा रहा है। यज्ञ का प्रचार-प्रसार सर्वत्र हो और इसके लिए प्रत्येक शिक्षण संस्था में यज्ञशाला-निर्माण का अभियान भी सूरीजी ने चलाया है। आर्यसमाज के लगभग पचासों विद्वानों को उनके नेतृत्व में अभिनन्दित तथा सम्मानित किया जा चुका है। उनके गौरवपूर्ण कार्यों की चर्चा हम **वैदिक पथ** के पूर्व अंकों में भी करते रहे हैं। हम **वैदिक पथ** परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि उनके नेतृत्व में प्रादेशिक सभा तथा डी०ए०वी० समिति कीर्त्तिमान के नवीन शिखर का स्पर्श करेगी।

गोहत्या, मांसाहार और तर्क

—डॉ० वेदप्रताप वैदिक

गोरक्षा से आर्थिक लाभ

गोहत्या के लिए अपने कई प्रान्तों में कड़ी सजा का प्रावधान है लेकिन गुजरात विधानसभा ने उम्र-कैद का कानून बनाकर अन्य राज्यों के लिए भी रास्ता खोल दिया है। गुजरात के साथ-साथ उत्तरप्रदेश में बूचड़खानों को लेकर जो बवाल मचा है, उसे देखकर यह माना जा रहा है कि भाजपा के मुख्यमंत्री लोग अपनेवाली पर उतर आए हैं। वे हिन्दुस्तान पर अपना हिन्दुत्व का एजेंडा थोपने लगे हैं। यदि आप इन खबरों के शीर्षक पढ़ें और टीवी चैनलों को चलते-चलते सुनें तो आपका भी यह विचार बन जाएगा कि भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ देश के मुसलमानों को तबाह करने पर उतारु हो गए हैं। लेकिन मैं समझता हूँ कि ऐसा नहीं है। उत्तरप्रदेश में बूचड़खानों पर सिर्फ यह सख्ती की गई थी कि जिन पर लायसेंस नहीं हैं, उन्हें चेतावनी दी गई थी। बिना लायसेंस के चलनेवाले बूचड़खाने और दुकानें अक्सर भयंकर गंदगी, बदबू और कीटाणुओं के अड्डे बन जाते हैं, चाहे उनके मालिक हिन्दू हों या मुसलमान! हिन्दुस्तान में जितने मुसलमान मांसाहारी हैं, उससे दुगुने-तिगुने हिन्दू, सिख और ईसाई मांसाहारी हैं। देश की सभी प्रान्तीय सरकारें यदि इसी सख्ती से पेश आएँ तो सबसे स्वच्छ आहार मिल सकेगा।

गुजरात में गोरक्षा का कड़ा कानून सराहनीय है, क्योंकि गाय को देश के हिन्दू माता के समान मानते हैं। शास्त्र भी कहते हैं—'**गावो विश्वस्य मातरः**'। आखिर, मुगल बादशाहों ने भी गोवध पर प्रतिबन्ध क्यों लगा रखा था? सिर्फ गुजरात ही नहीं, हिन्दुओं ही नहीं, सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि सारे संसार के लिए गाय ऐसा पशु है, जो मरने तक और मरने के बाद भी मानव-जाति का फायदा ही करता है। कोलकाता में गोबर गैस से बसें चल रही हैं। एक रुपए की मेथिन गैस से बसें १७ किलो मीटर तक चलती हैं। हरयाणा के ग्रामीण घरों में गोबर गैस के चूल्हे दनदना रहे हैं।

जो गाएँ दूध नहीं देतीं, उनके गोबर, मूत्र और गैस से ही लाखों रुपए की आमदनी होती है। जबकि गाय के मांस, खून, चमड़े, सींग वगैरह से सिर्फ पाँच-सात हजार रुपए ही कमाए जा सकते हैं। मैं तो कहता हूँ कि किसी भी दुधारु पशु गाय, भैंस, बकरी, भेड़ आदि की हत्या नहीं की जानी चाहिए। यदि उनका सदुपयोग किया जाए तो भारत में आर्थिक क्रान्ति की जा सकती है। मैं तो चाहता हूँ कि सारा विश्व ही निरामिष

हो जाए, शाकाहारी बन जाए लेकिन यह बिल्कुल अनुचित होगा कि आप मांसाहार पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दें या मांसाहारियों का अपमान करें। यह भी ठीक नहीं कि आप पशु की रक्षा के लिए मनुष्य को मारने के लिए तैयार हो जाएँ। यदि हम सारी दुनिया को शाकाहारी बना हुआ देखना चाहते हैं तो इस मुद्दे को हमें कानून की तलवार से नहीं, तर्क की तुला पर तोलकर प्रेम से परोसना होगा।

भोजन शाकाहारी हो या मांसाहारी

भोजन शाकाहारी हो या मांसाहारी इस विषय पर चर्चा युगों से चली आ रही है। शाकाहारी लोग इसके पक्ष में अपनी दलीलें देते हैं और मांसाहारी लोग अपनी।

वैसे तो कुछ लोग अपने फायदे के लिए कहते हैं कि यज्ञों में भी पशुओं की बलि दी जाती थी। इसके लिए मन्त्रों के प्रमाण भी देते हैं। मन्त्रों में गो, अज आदि शब्दों का प्रयोग अवश्य किया गया है पर ये शब्द पशुओं के लिए नहीं थे। ये इन्द्रियों के लिए प्रयुक्त किए गए शब्द हैं जिन्हें वश में करके मोक्ष की राह पर आगे बढ़ना है। उस समय तथाकथित विद्वानों ने अपने स्वार्थ के लिए पशुबलि की प्रथा को जन्म दिया।

जब भगवान् बुद्ध और महावीर ने यज्ञ में पशुबलि का विरोध किया तो उन्हें वेद-निन्दक कहकर अपमानित और बहिष्कृत किया गया। स्वामी दयानन्द सरस्वती सहित अनेक समाज-सुधारकों ने इस मांसाहार का विरोध किया।

शाकाहार हमें अधिक स्वस्थ रखता है। मांसाहार खाने वाले अपेक्षाकृत अधिक रोगी बनते हैं। इस मांसाहार से तामसिक वृत्तियाँ बढ़ती हैं। क्रोध, हिंसा, असहिष्णुता आदि की वृद्धि होती है।

पहली बात तो यह है कि हर पशु-पक्षी में आत्मा का वास होता है। ईश्वर यह कदापि आज्ञा नहीं देता कि हम उसकी बनाई सृष्टि को नष्ट करें। हमारे बच्चों को काँटा भी चुभता है तो हम परेशान हो जाते हैं परन्तु उस परमपिता की जिन्दा संतानों को हम मारकर खा जाते हैं। एक बात आज तक मेरी समझ में नहीं आई कि एक मनुष्य यानि जीव को मारने पर आजीवन कारावास की सजा मिलती है तो उन निरीह जीवों को मारने की सजा का क्या प्रावधान है? शायद उनका न्याय उस बड़ी अदालत में होता है, जिसे भगवान् की अदालत कहते हैं।

ईश्वर ने अपनी सृष्टि को बैलेंस करने के लिए खुद की विधान बनाया है कुछ जीव उसने शाकाहारी बनाए हैं और कुछ मांसाहारी जीव

बनाए हैं। वह समय-समय पर प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से जीवों का सामंजस्य बिठा देता है।

मांसाहार तर्क की कसौटी पर

१. मांसाहार से दिल के दौरे का खतरा २३ गुणा अधिक हो जाता है।
२. मांसाहार कैलोस्ट्रोल की मात्रा खतरनाक स्तर तक ले जाता है।
३. कैंसर के ७० प्रतिशत रोगी मांसाहारी हैं।
४. दुनिया के ९५ प्रतिशत वैज्ञानिक शाकाहारी हैं।
५. दुनिया के ९८ प्रतिशत समाजसेवी शाकाहारी हैं।
६. मनुष्य के दाँत शाकाहारी जीवों जैसे हैं।
७. मनुष्य के पेट, आंत और लीवर की कार्य प्रणाली शाकाहारी जीवों जैसी है।
८. हर बीमारी के आसार मांसाहार में अधिक पाए जाते हैं।
९. हत्या के समय पशु की चीख-पुकार ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण है।
१०. मांसाहार शाकाहार से १००० गुणा अधिक पानी बरबाद करता है।
११. मांसाहार हिंसक और स्वार्थी विचार बढ़ाता है।
१२. अमेरिका में हर साल २० प्रतिशत लोग शाकाहारी बन रहे हैं।
१३. दुनिया में भूख से मरने वाले ३५००० लोगों को शाकाहार बचा सकता है।
१४. धर्म न सही विज्ञान की मानें और शाकाहार अपनाकर स्वस्थ रहें।
१५. मांसाहार करने वालों के काम भी जानवरोंवाले जैसे होते हैं। ज्यादातर अपराधी मांसाहारी लोग होते हैं।
१६. मांसाहारी लोग ज्यादातर लाइलाज बीमारियाँ फैलाते हैं।

अब आप सुधीजन अपने तर्क की कसौटी पर परखें। रोगों के आ जाने पर तो डॉक्टरों के परामर्श से मांसाहारियों को भी शाकाहार अपनाना ही पड़ता है।

गोरक्षा-राष्ट्ररक्षा

(वेदादिशास्त्रों में मांसभक्षण तथा गोवध का सर्वथा निषेध)

लेखक—**डॉ० ज्वलन्तकुमार शास्त्री**

डिमाई साइज, पृष्ठ ५६, मूल्य २० रुपये, प्रचारार्थ १००० रुपये सैकड़ा

मांसाहार से संभावित खतरे

अमेरिकन डॉक्टरों की सबसे बड़ी एसोसिएशन ने जिसमें लगभग पाँच हजार डॉक्टर हैं, अमेरिका के राष्ट्रपति को वर्ष १९९९ में एक ज्ञापन भेजकर सूचित व सावधान करते हुए आग्रह किया था कि यदि अमेरिकन नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा करनी है, उन्हें मस्तिष्कीय पक्षाघात, हृदय रोग, कैंसर जैसे असाध्य रोगों से बचाना है, तो पूरे देश में मांसाहार से सम्भावित एवं प्रत्यक्ष खतरों के दृष्टिगत राष्ट्रव्यापी चेतावनी प्रसारित की जाये। चूँकि अमेरिकन मांस इण्डस्ट्रीज काफी सशक्त, प्रभावशाली, पैसे-वाली और चुनावी राजनीति में दखल रखने में सक्षम है जिससे अमेरिकन राष्ट्रपति ऐसी राष्ट्रव्यापी चेतावनी प्रसारित करने का साहस नहीं बटोर सके। लेकिन इस ज्ञापन के लीक होते ही जनता में यह प्रभाव पड़ा कि अमेरिका में शाकाहार के पक्ष में मानसिकता विकसित होने लगी। आज स्थिति यह है कि अमेरिका में हर वर्ष दस लाख लोग मांसाहार छोड़ शाकाहारी बन रहे हैं।

सन् १९७५ के नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ० माइकल एस० ब्राउन तथा डॉ० जोसेफ एल० गोल्डस्टीन ने सिद्ध कर दिया कि अधिकांश मौतों का मूल कारण हृदय रोग ही है अतः कोलोस्ट्रोल को रक्त में जमने से रोकना अत्यावश्यक है।

कोलोस्ट्रोल सबसे अधिक अण्डे में लगभग ५ ग्रेन एक अण्डे में होता है। जबकि फल-वनस्पति में न के बराबर। कोलोस्ट्रोल से उच्च रक्तचाप तथा किडनी के अनेक रोग पैदा होते हैं। अण्डे को फ्राई या रोस्ट करने से कोलोस्ट्रोल मूत्राशय में पथरी का रूप धारण कर लेता है। कोलोस्ट्रोल चूँकि रक्त प्रवाह में अवरोधक है अतः मस्तिष्क में जाने वाले रक्त में रुकावट पड़ने से स्ट्रोक की स्थिति पैदा हो जाती है। जिगर तथा शरीर के अन्य भागों के सैल्स में एक उपयोगी पदार्थ रिस्पटर होता है, जो रक्त में पाये जाने वाले पदार्थ लोडेसिट को रक्त लियाप्रोटीन (एल०डी०एल०) व कोलोस्ट्रोल को रक्त में विलीन कर देता है। अण्डे व मांस का सेवन करने से शरीर के रिस्पटरों की संख्या घट जाती है जिससे रक्त में कोलोस्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है और वह रक्तवाहिनियों में जमा होकर हृदयघात (हार्ट अटैक) का कारण बनता है।

स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, बफैलो में की गई शोध से यह प्रकाश में आया है कि अमरीका में हर वर्ष सैंतालीस हजार से भी अधिक ऐसे बच्चे पैदा होते हैं, जिन्हें माता-पिता के मांसाहारी होने का खामियाजा भुगतना पड़ता है क्योंकि वे जन्म-जात रोगों का शिकार होते हैं जो आयु भर उनका पीछा नहीं छोड़ते।

वैज्ञानिकों ने पाया है कि मांस प्राप्ति के लिए जब किसी जानवर या

पशु को काटा जाता है तो भूख, प्यास, भय, घबराहट के कारण उसके शरीर की पाचन क्रिया, रक्त संचार क्रिया तथा मेटोबोलिज्म सम्बन्धी प्रक्रिया एकदम बन्द हो जाती है, जिससे गुणहीन द्रव्य (मल, मूत्र, वीर्य) जानवरों के शरीर से बाहर नहीं निकल पाता। मांसपेशी (स्नायु), कोशिकाएँ कुछ घण्टों तक विष बनाती हैं पर उसे बाहर निकालने की प्रक्रिया खत्म हो चुकी होती है, जिससे यह विष जो एडरीनालिन (Adrenalin) कहलाता है, जानवरों के पूरे शरीर अर्थात् रक्त व मांस में फैल जाता है। इस विष के कारण ही मांसाहारी व्यक्तियों में ट्राईचिनोसिस, पेट के कीड़े, टी०बी० (तपेदिक, क्षय), मस्तिष्क सम्बन्धी रोग, गठिया, यकृत में रक्त बहुलता, एपेनडिसाटिस (आंत का फोड़ा), पागलपन आदि रोग हो जाते हैं। एडरीनालिन के साथ जब क्लोरिनेटिड हाइड्रोकार्बन लिया जाता है तब यह हार्ट अटैक (हृदयघात) का गम्भीर खतरा पैदा कर देता है।

दिवङ्गत मनीषी श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य

वैदिक पथ के पूर्व सम्पादक श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य का निधन २९ मार्च, २०१६ ई० को उनके पुत्र सैन्य अधिकारी के बैङ्गलुरु-आवास पर हो गया। उनके दूसरे पुत्र ने एकाध वर्ष पूर्व विष प्रयोग से अपने को सपरिवार समाप्त कर लिया था। इस अति दारुण दुःखप्रद घटना से वे अन्दर से टूट चुके थे, अपने को ज्यादा दिन नहीं सम्भाल पाये और चल बसे।

सत्येन्द्रसिंहजी बैंक-अधिकारी होते हुए भी स्वाध्यायशील थे। पत्र-पत्रिकाओं की फाइलें सुरक्षित रखते थे। अपने स्वाध्याय के कारण ही उनकी आर्यसमाज में प्रतिष्ठा थी। **वैदिक पथ** का सम्पादन २००९ से (जनवरी) २०१२ ई० तक उन्होंने किया। मैं अपने ऊपर उनकी देन इस रूप में मानता हूँ कि उन्होंने इस पत्र का सम्पादन करते हुए मुझे **वैदिक पथ** से इतना ज्यादा जोड़ लिया कि उनके द्वारा सम्पादन-कार्य से विराम लेते ही मुझे इससे जुड़ना पड़ गया। **वैदिक पथ** के सम्पादन का अवैतनिक दायित्व को स्वीकारने की पृष्ठभूमि में मेरे ऊपर पूज्यपाद स्वामी सत्यप्रकाशजी सरस्वती तथा पूज्यवर विद्वत्शिरोमणि पं० युधिष्ठिर मीमांसकजी का गहरा प्रभाव ही कारण रहा है। श्री सत्येन्द्रसिंहजी के द्वारा एकाध ऐसा लेख भी लिखा गया जो सत्य से कोसों दूर था। पुनरपि उनके इस उपकार के कारण ही मैंने उस लेख की उपेक्षा कर दी। व्यक्तिगत अनेक त्रुटिपरक अन्य विद्वानों के लेखों की भी पूज्य स्वामी सत्यप्रकाशजी की दी गई सीख के कारण मैं प्रायः उपेक्षा ही कर दी है। मैंने अपने उन सभी कृपालु मित्रों द्वारा की गई व्यक्तिगत आलोचना पर कुछ नहीं लिखूँगा लेकिन सैद्धान्तिक भ्रमजाल फैलानेवाले उन लेखों का भविष्य में जबाब जरूर दूँगा, जिससे भ्रान्ति-निवारण के साथ ही यथार्थ तथ्य से आर्यजनता अपरिचित न रहे। अस्तु श्री सत्येन्द्रसिंहजी के प्रति **वैदिक पथ** की कृतज्ञता-सम्पूरित श्रद्धाञ्जलि।

जाति मिटे तो गरीबी हटे

—वेदप्रताप वैदिक

जातीय गणना के इरादे को देश सफल चुनौती दे रहा है। जबसे 'सबल भारत' ने 'मेरी जाति हिन्दुस्तानी' आन्दोलन छेड़ा है, इसका समर्थन बढ़ता ही चला जा रहा है। देश के वरिष्ठतम नेता, न्यायाधीश, विधिशास्त्री, विद्वान्, पत्रकार, समाजसेवी और आम लोग भी इससे जुड़ते चले जा रहे हैं। इसमें सभी प्रान्तों, भाषाओं, जातियों, धर्मों और धन्धों के लोग हैं। ऐसा नहीं लगता कि यह मुट्ठीभर बुद्धिजीवियों का बुद्धि-विलास भर है।

दूसरी खुशी यह है कि जो लोग हमारे आन्दोलन का विरोध कर रहे हैं, वे भी यह बात बराबर कह रहे हैं कि वे भी जात-पांत विरोधी हैं। वे जन-गणना में जाति को इसीलिए जुड़वाना चाहते हैं कि इससे आगे जाकर जात-पांत खत्म हो जाएगी। कैसे खत्म हो जाएगी, यह बताने में वे असमर्थ हैं। जातीय जन-गणना के पक्ष में जो तर्क वे देते हैं, वे इतने कमजोर हैं कि आप उनका जवाब न दें तो भी वे अपने आप ही गिर जाते हैं। फिर भी उन सज्जनों के साहस की दाद देनी होगी कि वे जातिवाद की खुले-आम निन्दा कर रहे हैं।

जन-गणना में जात को जोड़ना ऐसा ही है, जैसे बबूल का पेड़ बोना और उस पेड़ से आम खाने का इंतजार करना! हर व्यक्ति से जब आप उसकी जात पूछेंगे और उसे सरकारी दस्तावेजों में दर्ज करेंगे तो क्या वह अपनी जात हर जगह जताने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा? उसकी व्यक्तिशः पहचान तो दरी के नीचे सरक जाएगी और उसकी जातिशः पहचान गद्दी पर जा बैठेगी। क्या पाठशाला-प्रवेश, क्या नौकरी, क्या पदोन्नति, क्या यारी-दोस्ती, क्या काम-धंधा, क्या राजनीति, क्या सामाजिक-जीवन सभी जगह उन लोगों को क्या उनकी जात से नहीं पहचाना जाएगा और क्या वही उनके अस्तित्व का मुख्य आधार नहीं बन जाएगी? आज भी जात खत्म नहीं हुई है। वह है, लेकिन उसका दायरा शादी-ब्याह तक सिमट गया है। अब दफ्तर, रेल, अस्पताल या होटल में कोई किसी की जात नहीं पूछता। सब सबके हाथ का खाना खाते हैं और शहरों में अब शादी में भी जात के बंधन टूट रहे हैं। यदि जन-गणना में हम जात को मान्यता दे देंगे तो दैनन्दिन जीवन में उसे अमान्य कैसे करेंगे? जन-गणना में पहुँचकर वह घटेगी या बढ़ेगी?

शादी के अलावा जात अगर कहीं जिन्दा है तो वह राजनीति में है। जब राजनीतिक दलों और नेताओं के पास अपना कोई शानदार चरित्र नहीं

होता, सिद्धान्त नहीं होता, व्यक्तित्व नहीं होता, सेवा का इतिहास नहीं होता तो जात ही उनका बेड़ा पार करती है। जात मतदाताओं की बुद्धि हर लेती है। वे किसी भी मुद्दे का निर्णय उचित-अनुचित या शुभ-अशुभ के आधार पर नहीं, जात के आधार पर करते हैं। जैसे भेड़-बकरियाँ झुंड में चलती हैं वैसे ही मतदाता भी झुंड-मनोवृत्ति से ग्रस्त हो जाते हैं। दूसरे अर्थों में राजनीतिक जातिवाद मनुष्यों को मवेशी बना देता है। क्या यह मवेशीवाद हमारे लोकतन्त्र को जिन्दा रहने देगा? जातिवाद ने भारतीय लोकतन्त्र की जड़ें पहले से ही खोद रखी हैं। अब हमारे जातिवादी नेता जन-गणना में जाति को घुसवाकर हमारे लोकतन्त्र को बिल्कुल खोखला कर देंगे। जैसे हिटलर ने नस्लवाद का भूत जगाकर जर्मन जनतन्त्र को खत्म कर दिया, वैसे ही हमारे जातिवादी नेता भारतीय लोकतन्त्र को तहस-नहस कर देंगे। नस्लें तो दो थीं, जातियाँ तो हजारों हैं। भारत अगर टूटेगा तो वह शीशे की तरह टूटेगा। उसके हजारों टुकड़े हो जाएँगे। वह ऊपर से एक दिखेगा लेकिन उसका राष्ट्र-भाव नष्ट हो जाएगा। नागरिकों के सामने प्रश्न खड़ा होगा—राष्ट्र बड़ा कि जात बड़ी? यह कहने वाले कितने होंगे कि राष्ट्र बड़ा है जात छोटी!

दलितों और पिछड़ों के जातिवादी नेताओं को यह गलतफहमी है कि जातिवाद फैलाकर वे बच निकलेंगे। वे क्यों भूल जाते हैं कि उनकी हरकतें जवाबी जातिवाद को जन्म देंगी? जन-गणना के सवाल पर ही यह प्रक्रिया शुरू हो गई है। कई सवर्ण नेताओं ने मुझे गुपचुप कहा कि जातीय गणना अवश्य होनी चाहिए, क्योंकि उससे बहुत से जाले साफ हो जाएँगे। सबसे पहले तो यह गलतफहमी दूर हो जाएगी कि देश में सवर्ण लोग सिर्फ १५ प्रतिशत हैं। ताजातरीन राष्ट्रीय सेम्पल सर्वे के अनुसार सवर्णों की संख्या लगभग ३५ प्रतिशत है और पिछड़ी जातियों की ४१ प्रतिशत! यदि इन जातियों में से 'मलाईदार परतों' को अलग कर दिया जाए और वास्तविक गरीबों को गिना जाए तो उनकी संख्या शायद सवर्णों से भी कम निकले। ऐसी हालत में उन्हें अभी जो आरक्षण मिल रहा है, उसे घटाने की मुहिम चलाई जाएगी। १९३१ की अंतिम जातीय गणना ने तथाकथित पिछड़ी जातियों की संख्या ५२ प्रतिशत बताई थी। इसी आधार पर उन्हें २७ प्रतिशत आरक्षण मिल गया। तो क्या अब उसे घटाकर २० या २२ प्रतिशत करना होगा? इसके अलावा जातीय जनगणना हुई तो आरक्षण प्राप्त जातियों में जबर्दस्त बंदरबाँट शुरू हो जाएगी। सभी जातियों के अन्दर उप-जातियाँ और अति-उपजातियाँ हैं। वे भी अपना हिस्सा माँगेंगी। जो नेता जातीय गणना की माँग कर रहे हैं, उनके छक्के छूट

जाएँगे, क्योंकि उनकी प्रभावशाली खापों के विरुद्ध बगावत हो जाएगी। उनकी मुसीबत तब और भी बढ़ जाएगी, जब जाट और गूजर जैसी जातियाँ सारे भारत में आरक्षण के लिए खम ठोकने लगेंगी। उच्चतम न्यायालय ने आरक्षण की सीमा ५० प्रतिशत बाँध रखी है। इस ५० प्रतिशत को लूटने-खसोटने के लिए तब ५०० से ज्यादा जातीय दावेदार खड़े हो जाएँगे। अगर जातीय गणना हो गई तो आरक्षण मजाक बनकर रह जाएगा। कौन नहीं चाहेगा कि उसे मुफ्त की मलाई मिल जाए? जातीय गणना निकृष्ट जातिवाद को पनपाएगी। जो वास्तव में गरीब हैं, उन्हें कोई नहीं पूछेगा लेकिन जिन जातियों के पास संख्या-बल और डण्डा-बल है, वे मलाई पर हाथ साफ करेंगी? इस लूट-खसोट में वे मुसलमान और ईसाई भी तत्पर होना चाहते हैं, जो जातीय-अभिशाप से बचने के लिए धर्मान्तरित हुए थे।

जो लोग जातीय गणना के पक्षधर हैं, उनसे कोई पूछे कि आप आखिर यह चाहते क्यों हैं? आप गरीबी हटाना चाहते हैं या जात जमाना चाहते हैं? यदि गरीबी हटाना चाहते हैं तो गरीबी के आंकड़े इकट्ठे कीजिए। यदि गरीबी के आंकड़े इकट्ठे करेंगे तो उसमें हर जात का गरीब आ जाएगा। कोई भी जात नहीं छूटेगी लेकिन सिर्फ जात के आंकड़े इकट्ठे करेंगे तो वे सब गरीब छूट जाएँगे, जिनकी जाति आरक्षित नहीं हैं। भारत में एक भी जात ऐसी नहीं है, जिसके सारे सदस्य गरीब हों या अमीर हों। जिन्हें हम पिछड़ा-वर्ग कहते हैं, उनके लाखों-करोड़ों लोगों ने अपने पुश्तैनी काम-धन्धे छोड़ दिए हैं। उनका वर्ग बदल गया है, फिर भी जात की वजह से वे पिछड़ा मानने पर मजबूर किए जाते हैं। क्या आंबेडकर, क्या अब्दुल कलाम, क्या के०आर० नारायण, क्या मायावती, क्या मुलायमसिंह, क्या लालू पिछड़े हैं? ये लोग अगड़ों से भी अगड़े हैं। क्या टाटा को कोई लुहार कहता है? क्या बाटा को कोई चमार कहता है? क्या कमोड बनाने वाली हिन्दवेयर कम्पनी को कोई भंगी कहता है? लेकिन जातीय गणना चलाकर हम इतिहास के पहिए को पीछे की तरफ मोड़ना चाहते हैं। हर नागरिक के गले में उसकी जात की तख्ती लटकवाना चाहते हैं। २१वीं सदी के भारत को हम पोंगापन्थी और पीछे देखू क्यों बनाना चाहते हैं?

काका कालेलकर और मंडल आयोग के पास गरीबी के पूरे आंकड़े नहीं थे। इसीलिए उन्होंने सरल उपाय ढूँढ़ा। जाति को आधार बनाया, लेकिन यह आधार इतना अवैज्ञानिक था कि नेहरू और मोरारजी, दोनों ने इसे रद्द कर दिया। विश्वनाथ प्रताप सिंह ने इसे अपना राजनीतिक हथियार बनाया। उनकी राजनीति तो कुछ माह के लिए सँवर गई लेकिन समाज बिखर गया। असली गरीबों को कोई खास लाभ नहीं मिला। अब

जबकि लाखों कर्मचारी हैं, कम्प्यूटर के विशेषज्ञ हैं, गरीबी के सही-सही आंकड़ें क्यों नहीं इकट्ठे किए जाते ? जात के अधूरे, असत्य और अवैज्ञानिक आंकड़े इकट्ठे करके आप कैसी नीति बनाएँगे, यह बताने की जरूरत नहीं है। जिस जातीय गणना का विरोध १९३१ में गाँधी, नेहरू और काँग्रेस ने किया और जिसे हमारे संविधान-निर्माताओं ने अनुचित माना, उस कैंसर के कीटाणु को अब राष्ट्र की धमनियों में धँसवाने की कोशिश क्यों हो रही है ? क्या हम भूल गए कि ११ जनवरी १९३१ को राष्ट्रीय काँग्रेस ने 'जन-गणना बहिष्कार दिवस' मनाया था ?

जो लोग जातीय गणना के पक्षधर हैं, वे अनजाने ही देश के पिछड़े वर्गों, गरीबों और वंचितों का बंटाधार करवाने पर तुले हुए हैं। वे आरक्षण को अनन्तकाल तक बनाए रखना चाहते हैं। देश के ६०-७० प्रतिशत लोग सदा अपाहिज बने रहें, सवर्णों की दया पर जिन्दा रहे और आरक्षण की बैसाखियों के सहारे घिसटते रहें, यही उनकी गुप्त वासना है। इस वासना के मूल में है, वोटों की राजनीति! तीन-चौथाई भारत अपंग बना रहे तो बने रहे, हमें तो वह वोट देता रहेगा। डॉ० आंबेडकर खुद इस आरक्षण को दस साल से ज्यादा नहीं चलाना चाहते थे लेकिन अब साठ साल चलकर भी यह कहीं नहीं पहुँचा है। देश की प्रथम श्रेणी की नौकरियों में आरक्षित पद खाली पड़े रहते हैं। अब तक केवल ४-५ प्रतिशत आरक्षित पद ही भरे जाते हैं। योग्यता का मानदंड ढ़ीला कर देने पर भी यह हाल है। हमारे जातिवादी नेता मूल में क्यों नहीं जाते ? वे हमारे देश के पिछड़ों के लिए किसी ऐसे आरक्षण का प्रावधान क्यों नहीं करते, जिसे पाकर वे अगड़ों से भी अधिक योग्य बनें। किसी की दया पर जिन्दा न रहें। ऐसा आरक्षण नौकरियों में नहीं, शिक्षा में दिया जाना चाहिए। किसी जाति या मजहब के भेदभाव के बिना प्रत्येक वंचित के बच्चों को दसवीं कक्षा तक मुफ्त शिक्षा, मुफ्त आवास, मुफ्त भोजन और मुफ्त वस्तु मुहैया करवाए जाएँ। देखिए, सिर्फ दस साल में क्या चमत्कार होगा। भारत का नक्शा ही बदल जोगा। यदि बच्चों को काम-धन्धों का अनिवार्य प्रशिक्षण दिया जो तो वे सरकारी बाबू क्यों बनना चाहेंगे ? जिस दिन भारत में हाड़-तोड़ काम की इज्जत और लज्जत कुर्सीतोड़ काम के लगभग बराबर या ज्यादा हो जाएगी, उसी दिन इस देश में क्रान्ति हो जाएगी। समतामूलक समाज बनेगा। न कोई सवर्ण रहेगा और न अवर्ण! द्विज और अद्विज में फर्क नहीं होगा। सभी द्विज होंगे। शिक्षा के गर्भ से दुबारा जन्मे हुए!

भारत का संविधान प्रतिज्ञा करता है कि वह भारत को जातिविहीन समाज बनाएगा लेकिन हमारे कुछ नेता संविधान को शीर्षासन कराने पर

उतारू हैं। संविधान में 'जातियों' को संरक्षण या आरक्षण देने की बात भी नहीं कही गई है। 'अनुसूचित जाति' शब्द का प्रयोग जरूर हुआ है लेकिन सबको पता है कि अनुसूचित नाम की कोई जाति भारत में नहीं है। हरिजन, अछूत और दलित शब्द पर ज्यादातर लोगों को आपत्ति थी। इसीलिए अछूतों के लिए 'अनुसूचित जाति' शब्द का प्रयोग हुआ। अस्पृश्यता को खत्म करने के लिए जैसे 'अनुसूचित जाति' शब्द का प्रयोग हुआ, वैसे ही हमने जातिवाद को खत्म करने के लिए 'मेरी जाति हिन्दुस्तानी' शब्द का प्रयोग किया है। संविधान ने 'पिछड़े वर्गों' के 'नागरिकों' के प्रति विशेष सुविधा की बात कही है। थोकबंद जातियों की बात नहीं, जरूरतमंद नागरिकों की बात! जातीय आधार पर थोक में रेवड़ियाँ बाँटना संविधान का उल्लंघन तो है ही, यों भी उन सबका हक मारना भी है, जो सच में जरूरतमंद हैं। रेवड़ियाँ भी कितनी हैं? हर साल पिछड़ों को यदि चार-पाँच हजार नौकरियाँ मिल गईं तो भी क्या उन ७०-८० करोड़ लोगों का पेट भर जाएगा, जो २० रुपये रोज़ पर गुजारा कर रहे हैं? चार-पाँच हजार के मुँह में लॉलीपॉप और ८० करोड़ के पेट पर लात, यही जातीय आरक्षण की फलश्रुति है। यदि जातीय गणना के आधार पर आरक्षण ७० प्रतिशत भी हो गया तो किसका भला होगा? सिर्फ मलाईदार परतों का! जो नेता और नौकरशाह पिछड़ी जातियों के हैं, उनके 'शील और व्यसन' सवर्णों से भी ज्यादा गए-बीते हैं। वे अपनी जातियों से कट चुके हैं। जातीय गणना करवाकर वे अपनी जातियों के लोगों को अपनी ही तोप का भूसा बनाएँगे। वे अपने ही लोगों को ठगेंगे। वे संविधान और राज्य की मर्यादा का भी उल्लंघन करेंगे। संविधान और भारत गणराज्य सभी नागरिकों की समान सेवा और रक्षा के लिए बने हैं, न कि कुछ खास जातियों के लिए! सबकी जातें गिनवाकर आप जातिविहीन समाज की रचना कैसे करेंगे, यह समझ में नहीं आता? हम भारत को जातिविहीन बनाने की बजाय जातियों का महाभारत तो नहीं बना देंगे?

जातीय गणना के पक्षधर अपने समर्थन में अमेरिका का उदाहरण देने लगते हैं। जैसे कालों की गिनती हुई और उन्हें विशेष अवसर दिया गया, वैसे ही भारत में जातीय गणना हो और विशेष अवसर दिए जाएँ। यह तुलना अज्ञान पर आधारित है। अमेरिका के काले लोगों की तुलना भारत के अद्विजों से बिल्कुल नहीं की जा सकती। भारत की अद्विज जातियाँ और द्विज जातियाँ भी ऊपर-नीचे होती रहती हैं। द्विज कब अद्विज और अद्विज कब द्विज बन जाते हैं, पता ही नहीं चलता। १९३१ के सेंसस कमिश्नर डॉ० जे० एच० हट्टन ने तो यहाँ तक कहा था कि एक ही समय में एक ही जाति एक ही प्रान्त में द्विज और अद्विज दोनों है। कई जातियों

ने अपने आप को १९११ की जनगणना में चमार लिखाया था। उन्हीं ने १९२१ में खुद को क्षत्रिय और १९३१ में ब्राह्मण लिखवा दिया। इसी तरह अंग्रेजों के जमाने में हुई जनगणनाओं में जातियों की संख्या कुछ सौ से बढ़कर हजारों में चली गई। जातीय गणना कभी वैज्ञानिक हो ही नहीं सकती, क्योंकि हर व्यक्ति अपनी जाति ऊँची बताता है या अपने जातीय मूल को ऊँचा बताता है। उसे नापने का कोई वस्तुनिष्ठ मापदंड है ही नहीं। गरीबी का है, जाति का नहीं। कालों की जाति पूछने की जरूरत कभी नहीं होती। वह तो देखने से ही पता चल जाती है। उनकी सिर्फ गरीबी पूछी गई और उसका इलाज किया गया। इसी तरह भारत में हम जाति को भूलें और गरीबी को याद रखें। जात को याद रखने से गरीबी दूर नहीं होगी। गरीब की जात क्या होती है? वह तो खुद ही एक जात है। भारत की जातियाँ प्राकृतिक नहीं है। मनुष्यकृत हैं। वे जैसे पैदा की गई हैं, वैसे ही खत्म भी की जा सकती हैं लेकिन गोरे और काले का रंगभेद तो प्रकृतिप्रदत्त है। इसीलिए रंगभेद और जातिभेद की तुलना नहीं की जा सकती, हालाँकि काले और गोरे का भेद भी ऊपरी ही है। सच्चाई तो यह है कि सारी मनुष्य जाति ही एक है। यदि एक नहीं होती तो वह समान प्रसवात्मिका कैसे होती? जैसे सवर्ण और अवर्ण स्त्री-पुरुष से सन्तान पैदा होती है, क्या गोरे और काले युग्म से नहीं होती? काले और गोरे के भेद में भी मनुष्यता का अभेद छिपा है। कोई गणना अगर मनुष्यों के बीच नकली और ऊपरी भेदों को बढ़ाए तो सभ्य समाज उसका स्वागत कैसे कर सकता है?

जातीय जनगणना भारत को दुनिया के सभ्य समाज में बैठने लायक नहीं रहने देगी। अभी भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र माना जाता है। जातीय जन-गणना के बाद उसे लोकतन्त्र नहीं, जातितन्त्र माना जाएगा। जन्म के आधार पर भेद-भाव करनेवाला भारत दुनिया का एक मात्र राष्ट्र होगा। कई रंगभेद विरोधी अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारतीय प्रतिनिधियों को जातिभेद के कारण भयंकर लताड़ें खानी पड़ती हैं। लोकतन्त्र में हर नागरिक समान होता है लेकिन जातितन्त्र में तो ऊँच-नीच का गगनचुंबी पिरेमिड उठ खड़ा होगा। यदि देश में १० हजार जातियाँ होंगी तो यह जातीय पिरेमिड १० हजार तल्लेवाला होगा। महाशक्ति के दर्जे पर पहुँचनेवाले भारत के लिए इससे बड़ा खतरा क्या होगा कि विदेशी शक्तियाँ इस जातीय विभाजन का इस्तेमाल अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए करेंगी। यह संयोग मात्र नहीं है कि भारत के विशेषज्ञ माने जानेवाले अनेक विदेशी समाजशास्त्री जातीय गणना के कट्टर वकील बन गए हैं। क्यों बन गए हैं? वे कहते हैं कि भारत को जानने-समझने के लिए सही-सही आंकड़ें चाहिए। वे

भारत को जानना-समझना क्यों चाहते हैं? किसलिए चाहते हैं? क्या इसलिए नहीं कि वे अपने-अपने राष्ट्रों के संकीर्ण स्वार्थों को सिद्ध करना चाहते हैं? वे जातीय गणना के जरिए जातिवाद के उस जहर को दुबारा फैलाना चाहते हैं, जो १८५७ के बाद अंग्रेजों ने फैलाया था। अंग्रेज ने प्रथम स्वाधीनता संग्राम के ठीक चार साल बाद जनगणना शुरू की और उसमें धीरे-धीरे मजहब और जात का जहर घोल दिया। १८७१ की जनगणना से जन्मी हंटर आयोग की रपट १९०५ के बंग-भंग का कारण बनी। मुसलमानों के बारे में इकट्ठे किए गए आंकड़ों का जो हश्र १९०५ और १९४७ में हुआ, वह अब जातियों के आंकड़ों का नहीं होगा, इसकी क्या गारंटी है? जाति का जहर स्वाधीनता आन्दोलन को नष्ट कर सकता था इसीलिए काँग्रेस ही नहीं, भगतसिंह, सुभाष, सावरकर और यहाँ तक कि आंबेडकर जैसे लोगों ने भी जातिवाद का विरोध किया। आंबेडकर ने तो 'जातिप्रथा का समूलनाश' नामक ग्रन्थ भी लिखा। आजादी के बाद राममनोहर लोहिया ने 'जात तोड़ो' आन्दोलन भी चलाया। जातीय गणना आंबेडकर और लोहिया के सपनों को दफन कर देगी।

भारत के किसी भी आर्ष-ग्रन्थ में जन्मना जाति का समर्थन नहीं है बल्कि कई जगह कहा गया है—'**जन्मना जायते शूद्रः, संस्कारात् द्विज उच्यते**' अर्थात् जन्म से सब शूद्र होते हैं, संस्कार से द्विज बनते हैं। गीता में भगवान् कृष्ण भी यही कहते हैं—'**चातुर्वण्यं मया सृष्टं गुणकर्म-विभागशः**' यानि चारों वर्ण मैंने गुण-कर्म के आधार पर बनाए हैं। मनुस्मृति में भी जन्मना जाति का स्पष्ट विरोध है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि जो लोग जातीय आधार पर राजनीति कर रहे हैं, उन्हीं की व्याख्या के अनुसार वे घोर 'मनुवादी' हैं। उन्होंने मनु की मूर्खतापूर्ण व्याख्या की और वे खुद उस 'मनुवाद' के सबसे बड़े प्रवक्ता बन गए हैं। कैसी विडम्बना है कि जिन्हें जातिवाद के समूलनाश का व्रत लेना चाहिए था, वे उसके सबसे बड़े संरक्षक बन गए हैं।

डॉ० लोहिया ने कहा था, 'मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तान की दुर्गति का सबसे बड़ा कारण जाति प्रथा है।' उन्होंने विदेशी हमलावरों की विजय का कारण भी देश में चली आ रही जाति प्रथा को ही माना। जाति-प्रथा सामाजिक जड़ता की प्रतीक है। जब तक देश में जाति-प्रथा कायम रहेगी, किसी को सामाजिक न्याय मिल ही नहीं सकता। अपनी योग्यता से कोई आगे नहीं बढ़ सकता। यदि आप ब्राह्मण के घर में पैदा नहीं हुए तो शोध और अध्ययन नहीं कर करते, यदि आप राजपूत नहीं तो हमलावरों से कैसे लड़ेंगे, यदि आप बनिए के घर पैदा नहीं हुए तो पूँजी कैसे बनाएँगे और यदि आप शूद्र के घर जन्मे हैं तो आप सिर्फ झाड़ू लगाएँगे। या

मजदूरी करेंगे। किसी भी राष्ट्र को तबाह करने के लिए क्या इससे अधिक कुटिल सूत्र कोई हो सकता है? भारत महाशक्ति बन रहा है तो इस सड़े हुए सूत्र के पतले पड़ने के कारण। अब जातीय गणना करवाकर इस सूत्र को, इस धागे को क्या हम मोटे से रस्से में नहीं बदल देना चाहते हैं? पिछले सौ-सवा सौ में देश की विभिन्न-जातियों के जो कठघरे जरा चरमराए हैं और इस चरमराहट के कारण जो सामाजिक तरलता बढ़ी है, क्या जातीयता बढ़ाकर हम उसे भंग नहीं कर देंगे? यदि शासकीय नीतियों का आधार जाति को बनाया जाएगा तो क्या हमारे अनेक पिछड़ी जातियों के नेताओं, विद्वानों और उद्योगपतियों को दुबारा उनके पुश्तैनी धन्धों में धकेला जाएगा? क्या उन्हें भेड़-चराने, मैला साफ करने और जूते गाँठने पर मजबूर किया जाएगा? यदि नहीं तो फिर जातीय चेतना जगाने की तुक क्या है?

जात को खत्म किए बिना देश से गरीबी खत्म नहीं की जा सकती। जन-गणना में जाति जुड़वाने के बजाय माँग तो यह होनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति अपने नाम के आगे से जातीय उपनाम (सरनेम) हटाए, जैसे कि हमारी मतदाता-सूचियों में होता है। अंग्रेज के आने के पहले क्या भारत में कोई जातीय उपनाम लगाता था? राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, सूर, तुलसी, कबीर, अशोक, अकबर, प्रताप, शिवाजी, नानक—किसके नाम से उसकी जाति पता चलती है? गुलामी में पनपी इस विष-बेल को हम कब काटेंगे? जो भी जातीय उपनाम लगाए, ऐसे उम्मीदवारों को चुनाव न लड़ने दिये जाएँ और सरकारी कर्मचारियों पर भी यही प्रतिबंध लागू किया जाए। जातीय आधार पर आरक्षण माँगनेवाले दलों की वैधता रद्द की जाए। जाति के इन बाहरी चिह्नों को नष्ट किया जाए तो वह अन्दर से भी टूटेगी।

जात-पांत के पतले पड़ने के कारण ही भारत की गुप्त ऊर्जा का अपूर्व विस्फोट हुआ है। ऐसे लाखों-करोड़ों लोग हैं, जो अपने जातीय धन्धों की अन्धी गली से बाहर निकले और उन्होंने अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा से सारे राष्ट्र को रोशन कर दिया। जातीय गणना होने पर इन लोगों को अपनी जात लिखानी होगी। इनका इससे बड़ा अपमान क्या होगा? देश का सबसे बड़ा विज्ञानकर्मी क्या यह लिखवाएगा कि वह मछुआरा है? क्या यह सत्य होगा? जातीय गणना देश में झूठ का विस्तार करेगी।

जातीय गणना उन सब परिवारों को भी काफी पसोपेश में डाल देगी, जो अन्तरजातीय हैं। जिन परिवारों में पिछली दो-तीन पीढ़ियों में अन्तरजातीय, अन्तरधार्मिक और अन्तरराष्ट्रीय विवाह होते रहे हैं, वे अपनी जात क्या लिखाएँगे? जातीय गणना प्रकारान्तर से कहेगी कि इस तरह के विवाह

उचित नहीं हैं, क्योंकि वे जातीय मर्यादा को भंग करते हैं। व्यक्ति-स्वातन्त्र्य पर इसे बड़ा प्रहार क्या होगा? भारत के नागरिकों के जीवन का संचालन भारत के संविधान से नहीं, गाँवों की खापों और पंचायतों से होगा, जिनके हाथ स्वतन्त्रचेता युवजनों के खून से रँगे हुए हैं।

भारत के उच्चतम न्यायालयों के अनेक निर्णयों में जाति को पिछड़ापन के निर्धारण में सहायक तो माना है लेकिन उसे एक मात्र प्रमाण नहीं माना है। उच्चतम न्यायालय ने 'मलाईदार परतों' की पोल खोलकर यह सिद्ध कर दिया है कि गरीबी का निर्धारण सिर्फ जाति के आधार पर नहीं किया जा सकता। यदि आरक्षण का आधार सिर्फ जाति है तो उसी जाति के कुछ लोगों को 'मलाईदार' कहकर आप जात-बाहर कैसे कर सकते हैं? यदि करते हैं तो आपको मानना पड़ेगा कि गरीबी का निर्धारण सिर्फ जाति के आधार पर नहीं हो सकता। वास्तव में गरीबी का निर्धारण तो गरीबी के आधार पर ही हो सकता है। उच्चतम न्यायालय ने अपने ताजातरीन निर्णय में दक्षिण भारतीय राज्यों की इस तिकड़म पर भी प्रश्न चिह्न लगा दिया है कि उन्होंने अपने यहाँ आरक्षण ६९ प्रतिशत तक कर दिया है। न्यायालय ने उन्हें सिर्फ एक साल की मोहलत दी है, यह सिद्ध करने के लिए कि उन्होंने जो बंदरबाँट की है, उसका आधार क्या है? जाहिर है कि इस बंदरबाँट का जातीय आधार उच्चतम न्यायालय की कूट-परीक्षा के आगे ध्वस्त हुए बिना नहीं रहेगा। जाति की आड़ में गरीबी को दरकिनार करने की साजिश कभी सफल नहीं हो पाएगी।

गरीबी के इस तर्क-संगत आधार को मानने में हमारे राजनीतिक दल बुरी तरह से झिझक रहे हैं। ऐसा नहीं कि वे इस सत्य को नहीं समझते। वे जान-बूझकर मक्खी निगल रहे हैं। वे वोट बैंक के गुलाम हैं। वे यह मान बैठे हैं कि यदि उन्होंने जातीय गणना का विरोध किया तो उनके वोट कट जाएँगे, उन्हें नुकसान हो जाएगा। वे यह भूल जाते हैं कि जातीय वोट मवेशीवाद के तहत जातिवादी पार्टियों को ही मिलेंगे, उन्हें नहीं मिलेंगे। इसके बावजूद उनकी दुकान चलती रह सकती है, क्योंकि देश के बहुसंख्यक लोग जाति नहीं, गुणावगुण के आधार पर वोट करते हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो केन्द्र में काँग्रेस और भाजपा की सरकारें कैसे बनतीं? देश में जितनी शिक्षा, सम्पन्नता और आधुनिकता बढ़ेगी, जाति का शिकंजा ढीला होता चला जाएगा। जाति गरीबी को बढ़ाती है और गरीबी जाति को बढ़ाती है। जिस दिन हमारे नेता गरीबी-उन्मूलन का व्रत ले लेंगे, जाति अपने आप नेपथ्य में चली जाएगी। सदियों से निर्बल पड़ा भारत अपने आप सबल होने लगेगा।

ओ३म्

न्यास द्वारा प्रकाशित तथा उपलब्ध पुस्तकें

क्रम.	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ	मूल्य
१.	सत्यार्थप्रकाश सजिल्द	महर्षि दयानन्द सरस्वती	४८०	१००/-
२.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (सजिल्द)	महर्षि दयानन्द सरस्वती	३५६	२००/-
३.	चतुर्वेद-संहिता	प्रेरक-स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती	२४५६	८२०/-
४.	संस्कारविधिः (सजिल्द)	महर्षि दयानन्द सरस्वती	२४८	८०/-
५.	उपदेश मञ्जरी	महर्षि दयानन्द सरस्वती	११२	२२/-
६.	आर्योद्देश्यरत्नमाला	महर्षि दयानन्द सरस्वती	३२	६/-
७.	(सम्पूर्ण पुस्तक दो रंग में)			
८.	व्यवहारभानुः	महर्षि दयानन्द सरस्वती	८०	८/-
९.	गोकरुणानिधि	महर्षि दयानन्द सरस्वती	४८	५/-
१०.	ऋग्वेदभाष्य (सात भाग) (सजिल्द)	पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार	४४८४	३३५०/-
११.	यजुर्वेदभाष्य (दो भाग) (सजिल्द)	पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार	१२४४	१०००/-
१२.	सामवेदभाष्य (दो भाग) (सजिल्द)	पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार	१०४४	६५०/-
१३.	अथर्ववेदभाष्य (तीन भाग) (सजिल्द)	पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार	१९०८	१६००/-
१४.	चतुर्वेदमन्त्रानुक्रमविवरणिका (सजिल्द)	डॉ० विजयवीर विद्यालङ्कार	८१६	६००/-
१५.	आदर्श नित्यकर्म विधि	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	२००	५०/-
१६.	संक्षिप्त सत्यार्थप्रकाश	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	१२०	२५/-
१७.	देवर्षि दयानन्द चरित	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	२५०	७०/-
१८.	धर्मशिक्षा	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	३२	५/-
१९.	वैदिक सूक्तमाला	संक० पं० वीरसेन वेदश्रमी भाष्य-स्वामी जगदीश्वरानन्द	९६	१६/-
२०.	महर्षि दयानन्द बोले	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	३२	४/-
२१.	आदर्श सत्सङ्ग गुटका	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	५६	१२/-
२२.	वेदों द्वारा समस्त समस्याओं का समाधान	पं० धर्मदेव विद्यामार्त्तण्ड	७६४	५००/-

२३.	विश्वगुरु स्वामी दयानन्द का जीवन चरित एवं उनकी शिक्षाएँ	दीवान बहादुर हरबिलास शारदा अनु०-आर्यमुनि वानप्रस्थ	८२४	७००/-
२४.	वैदिक सम्पत्ति (सजिल्द)	पं० रघुनन्दन शर्मा	७५२	४५०/-
२५.	महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित (सजिल्द)	देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय	७३६	४००/-
२६.	महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण जीवन-चरित्र (सजिल्द)	पं० लक्ष्मण आर्योपदेशक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	१३२३	९००/-
२७.	स्वाध्याय सन्दोह (सजिल्द)	स्वामी वेदानन्द तीर्थ	४६०	३००/-
२८.	सन्मार्ग दर्शन (सजिल्द)	स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती	४५६	१८०/-
२९.	बागी दयानन्द	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	५६	२२/-
३०.	गौ की गुहार	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	९२	३०/-
३१.	वैदिक सिद्धान्तरत्नावली (सजिल्द)	प्रो० सत्यपाल शास्त्री	४०६	२००/-
३२.	महर्षि दयानन्द : काल और कृतित्व (डीलक्स)	प्रा० कुशलदेव शास्त्री	४८६	५००/-
३३.	आर्यसमाज और डॉ० अम्बेडकर	प्रा० कुशलदेव शास्त्री	१२०	५०/-
३४.	महर्षि दयानन्द और महाराष्ट्र (डीलक्स)	प्रा० कुशलदेव शास्त्री	३२४	२५०/-
३५.	चतुर्वेदशतकम्	स्वामी अच्युतानन्द	१६८	७०/-
३६.	वैदिक विनय (सजिल्द)	आचार्य अभयदेव	४२४	२००/-
३७.	वैदिक विचारधारा	स्वामी स्वतन्त्रानन्द	२१६	६०/-
३८.	वरुण की नौका (डीलक्स)	आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति	३७६	३००/-
३९.	इतिहास के परिप्रेक्ष्य में अन्वेषण-प्राचीन संवत्-साहित्य-सृष्टि (सजिल्द)	आर्यपथिक धर्मवीर पं० लेखराम	१८४	९०/-
४०.	वैदिक स्वर्ग	पं० चमूपति एम०ए०	१९४	७०/-
४१.	चौदहवीं का चाँद	पं० चमूपति एम०ए०	२७०	१२०/-
४२.	यास्क युगीन वेदार्थ शैलियाँ	पं० चमूपति एम०ए०	६४	२०/-

४३.	वेदों की वर्णन शैलियाँ (डीलक्स)	आचार्य रामनाथ वेदालङ्कार	३४४	३००/-
४४.	वैदिक सूक्तियाँ	आचार्य रामनाथ वेदालङ्कार	८८	१८/-
४५.	आर्ष ज्योति	आचार्य रामनाथ वेदालङ्कार	३०४	१५०/-
४६.	वेदमञ्जरी (सजिल्द)	डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार	४४०	२००/-
४७.	वेद भाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियाएँ (सजिल्द)	डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार	२४८	१००/-
४८.	यजुर्वेद ज्योति (डीलक्स)	डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार	४६४	२००/-
४९.	अथर्ववेद ज्योति (डीलक्स)	डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार	४७२	२००/-
५०.	स्वामी श्रद्धानन्द : एक विलक्षण व्यक्तित्व (डीलक्स)	डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालंकार		३५०/-
५१.	आर्यसमाज क्या है	महात्मा नारायण स्वामी	७२	१६/-
५२.	शिक्षा वेदाङ्ग की परम्परा और आचार्य आपिशलि (सजिल्द, आर्टपेपर)	प्रचेतस्	१६४	१४०/-
५३.	वैदिक पुष्पाञ्जलि (डीलक्स)	आ० रामप्रसाद वेदालङ्कार	५९२	३००/-
५४.	वैदिक ओङ्कार उपासना	आ० रामप्रसाद वेदालङ्कार	१२०	३५/-
५५.	छान्दोग्योपनिषदामृत (सजिल्द)	आ० रामप्रसाद वेदालङ्कार	३५२	२००/-
५६.	दयानन्द सिद्धान्त भास्कर (सजिल्द)	कृष्णचन्द्र विरमानी	२१२	१३०
५७.	महर्षि दयानन्द की प्रामाणिक जन्मतिथि (आर्टपेपर)	डॉ० ज्वलन्तकुमार शास्त्री	११२	६०/-
५८.	ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज	डॉ० ज्वलन्तकुमार शास्त्री	६०८	३००/-
५९.	जीवन की धूप छाँव [आत्मकथा] (आर्टपेपर)	पं० नरेन्द्र	८०	४०/-
६०.	आर्य पर्व पद्धति	भवानीप्रसाद	२४०	७०/-
६१.	ईशोपनिषद्	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	९६	२५/-
६२.	संध्या क्यों और कैसे	पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय	१२२	४५/-

६३.	आस्तिकवाद (सजिल्द)	पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय	३७६	२००/-
६४.	धर्म का आदि स्रोत	पं० गङ्गाप्रसाद चीफ जस्टिस	१४४	४५/-
६५.	पथिक भजन सर्वस्व	पं० सत्यपाल 'पथिक'	९००	७००/-
६६.	दयानन्दोपनिषद्	पं० भीमसेन विद्यालङ्कार	१२८	३५/-
६७.	बौद्धमत और वैदिक धर्म	स्वामी धर्मानन्द	१२४	३५/-
६८.	सत्यार्थप्रकाश विमर्श	डॉ० रामप्रकाश	१७६	३५/-
६९.	योगमार्ग	स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक	४८	१६/-
७०.	अभ्यास और वैराग्य	स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक	९६	२४/-
७१.	अमीं भजन सुधा	भक्तराज अमींचन्द	८०	२५/-
७२.	महाभाष्यनवाह्निकस्य प्रश्नोत्तराणि (वार्तिक-व्याख्यासहितानी)	आचार्य ओङ्कार	१२८	५०/-
७३.	फलों से आरोग्य प्राप्ति	आचार्य ओङ्कार	९०	३०/-
७४.	योगामृत	श्री गोपाल, बी० ए०	६४	२०/-
७५.	ओङ्कार उपासना	स्वामी सत्यानन्द	३२	१०/-
७६.	देवयज्ञ	डॉ० फुन्दनलाल अग्निहोत्री	४०	१४/-
७७.	मीरपुरी सर्वस्व (डीलक्स)	पं० बुद्धदेव मीरपुरी	४३२	३००/-
७८.	आर्यसमाज क्या है	पं० मनसाराम वैदिक तोप	३२	५/-
७९.	पारस्कर गृह्यसूत्र (डीलक्स)	वेदरत्न पं० सत्यव्रत राजेश	२८०	१२०/-
८०.	वेदों में इतिहास नहीं	वेदरत्न पं० सत्यव्रत राजेश	६४	२५/-
८१.	ईश्वर-पूजा का वैदिक स्वरूप	पं० रामचन्द्र देहलवी	४८	५/-
८२.	बीते जीवन गले से लगाऊँ तुम्हें (आत्मकथा) (सजिल्द)	प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	३४४	१२०/-
८३.	रक्तरंजित है कहानी (द्वितीय भाग)	प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	१२८	२६/-
८४.	सत्यार्थप्रकाश : क्या और क्यों?	प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	८०	२०/-
८५.	महर्षि का बलिदान	प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	२०	४/-
८६.	वीतराग स्वामी सर्वदानन्द	प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	२०८	७०/-
८७.	भारत में विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं का इतिहास	कर्नल देवमित्र	२२४	८०/-
८८.	निगमामृतम्	डॉ० प्रियंवदा वेदभारती	११६	५०/-

८९.	धर्म के दस लक्षण	डॉ० प्रियंवदा वेदभारती	३२	२०/-
९०.	नवजागरण के पुरोधा- महर्षि दयानन्द सरस्वती (सजिल्द)	डॉ० भवानीलाल भारतीय	९६०	४००/-
९१.	ऋषि दयानन्द सिद्धान्त : जीवन दर्शन	डॉ० भवानीलाल भारतीय		२००/-
९२.	प्रो० महेशप्रसाद मौलवी ग्रन्थावली	डॉ० भवानीलाल भारतीय	१५४	८०/-
९३.	आर्यसमाज के प्राज्ञ पुरुष	डॉ० भवानीलाल भारतीय	८८	३०/-
९४.	भारत में बाइबिल	लुई जाकोल्यो, अनु० डॉ० भवानीलाल भारतीय	७२	२०/-
९५.	स्वामी दयानन्द और भारत में ईसाइयत (सजिल्द)	डॉ० भवानीलाल भारतीय	२३६	२००/-
९६.	क्या अथर्ववेद में जादू-टोना आदि है	डॉ० रघुवीर वेदालङ्कार	३८	२०/-
९७.	वैदिक वर्ण-व्यवस्था और समाजवाद	डॉ० ओम्प्रकाश आर्य	४८	१२/-
९८.	नये घर के दो पंछी	डॉ० ओम्प्रकाश वेदालङ्कार	५६	२०/-
९९.	मेरे तो गिरिधर गोपाल	डॉ० ओम्प्रकाश वेदालङ्कार	४८	१८/-
१००.	अपने आपको कैसे जाने व पढ़े	डॉ० ओम्प्रकाश वेदालङ्कार	५६	१६/-
१०१.	मृत्यु से अमृत की ओर	डॉ० ओम्प्रकाश वेदालङ्कार	१२६	४०/-
१०२.	शिवरात्रि का वैदिक पावन सन्देश	डॉ० ओम्प्रकाश वेदालङ्कार	४८	८/-
१०३.	भारत की राष्ट्रीय, सामाजिक एवं धार्मिक-चेतना के विकास में आर्यसमाज का अवदान (सजिल्द)	डॉ० पुष्पांजलि शर्मा	३४०	२००/-
१०४.	शंका समाधान	स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती	३१२	१००/-
१०५.	मृत्यु और उसके पश्चात्	महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती	७२	३०/-
१०६.	आर्य-गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	३२	१०/-
१०७.	विद्या-गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	६०	२२/-
१०८.	गुरु-गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	५६	२२/-
१०९.	सत्सङ्ग-गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	६४	२४/-
११०.	कन्या-गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	७६	१८/-

११११. अतिथि-गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	३२	१०/-
११२. राष्ट्र-गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	९६	३०/-
११३. आचार्य गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	३२	१६/-
११४. पण्डित गौरव	आचार्य ब्र० नन्दकिशोर	३२	१६/-
११५. श्रीमद् भागवत तत्वमीमांसा	राजबहादुर श्रीवास्तव	६४	२०/-
११६. ऋग्वेद में आचार-सामग्री (सजिल्द)	पं० सत्यप्रिय शास्त्री	२४८	१००/-
११७. वेदों में पर्यावरण विज्ञान	डॉ० चन्द्रशेखर लोखण्डे	११२	३२/-
११८. ऋषि दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन (सजिल्द)	डॉ० मञ्जुलता विद्यार्थी	३७४	१५०/-
११९. आर्यसमाज की मान्यताएँ	गजानन्द आर्य	८०	२०/-
१२०. वीराङ्गना महारानी कैकेयी	गजानन्द आर्य	९६	३०/-
१२१. पुराणों की हलचल	चन्द्रप्रकाश आर्य	४४	१२/-
१२२. वैदिक चिन्तन और आधुनिक पर्यावरण विज्ञान (सजिल्द)	डॉ० बृहस्पति मिश्र	३२८	१५०/-
१२३. भारतवर्षोन्नति कैसे हो (सजिल्द)	डॉ० वेदप्रकाश	४६४	३००/-
१२४. स्वास्थ्य के शत्रु	डॉ० वेदप्रकाश	१५२	८०/-
१२५. जीवन सौरभ	सत्यानन्द आर्य	१२०	२४/-
१२६. वाल्मीकि रामायण सूक्ति कोष	सत्यदेव निगमालङ्कार	१८४	८०/-
१२७. ओ३म् पीयूष	डॉ० वेदसाहनी एवं डॉ० राजकुमार साहनी	८०	२२/-
१२८. जैनशास्त्रों की असंगत बातें	बच्छराज सिंघी	१६८	२५/-
१२९. अन्तिम प्याला	जयन्त	८६	२७/-
१३०. उपनिषद् प्रकाश	महात्मा नारायण स्वामी	१२००	३२०/-
१३१. आदर्श गार्हस्थ्य जीवन	आचार्य भद्रसेन	२०८	८०/-
१३२. प्रभुभक्त दयानन्द और उनके आध्यात्मिक उपदेश	आचार्य भद्रसेन	१३८	३०/-
१३३. तनाव से मुक्ति	सन्दीप आर्य	१७४	७०/-
१३४. हिन्दी काव्यों में वैदिक आख्यान (सजिल्द)	डॉ० सुरेन्द्रकुमार	१९०	१२०/-

१३५. अनुरागरत्न (डीलक्स)	पं० नाथूराम शङ्कर शर्मा 'शङ्कर'	२३६	१५०/-
१३६. महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवनीपरक संस्कृत-काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन	प्रो० डॉ० धर्मवीर	३१६	१४०/-
१३७. ईश्वर से दूरी क्यों?	प्रकाश आर्य	११२	४०/-
१३८. माँसाहार क्यों निषिद्ध है	प्रा० डॉ० सुग्रीव काले	४८	२२/-
139. Solutions To the Modern Problems in the Vedas	Rt. Bharat Bhushan	128	150/-
140. Wisdom of the Vedas	Rt. Bharat Bhushan	184	150/-
141. Teachings of the Vedas	Pt. Dharma Dev Vidya Martand	64	50/-
142. Vedic Philosophy	Satya Pal Arya	142	120/-
143. Revitalising the Arya Samaj	Prof. Soodursun Jugessur	224	150/-
144. Vedic Sermons	Krishan Chopra	262	300/-
145. Introduction to the Indian Culture, Thought and Philosophy (डीलक्स संस्करण)	Bharat Bhooshan	56	50/-
146. Swami Dayanand : Thoughts, Beliefs and Philosophy	Bharat Bhooshan	62	50/-
147. Vedic Sanskrit: Mother of All Languages	Swami Dharmananda Saraswati	152	100/-
१४८. चारों वेदों के समान मन्त्रों का तात्पर्यार्थ चिन्तन	डॉ० चन्द्रकान्त गर्जे	२०४	१५०/-
१४९. विविधा	डॉ० चन्द्रकान्त गर्जे	४४०	३००/-
१५०. वेदतत्व-प्रकाश (श्राद्ध-निर्णय)	पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ	२२४	१५०/-
१५१. बाल प्रबोधिनी पुस्तिका	ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ	४०	६/-

१५२. प्रेरक जीवन	स्वामी देवव्रत	१९६	७०/-
१५३. हम क्या खायें घास या मांस	पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय	१९२	४०/-
१५४. श्रुति मन्थन	डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालंकार	७२६+ ४४पृष्ठ	६००/-
१५५. ऋक्सूक्ति रत्नाकर	डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालङ्कार	२६२	१२०/-
१५६. यजुः सूक्ति-रत्नाकर	डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालङ्कार	१००	६०/-
१५७. यजुर्वेद काव्यामृत	डॉ० विजयवीर विद्यालंकार	४९२	३००/-
१५८. मेरे प्रिय भजन	संकलनकर्त्ता-हजारीलाल आर्य	८०	६०/-
१५९. श्रुतिका	डॉ० जितेन्द्र कुमार	१७२	१००/-
१६०. वेदों पर अश्लीलता का व्यर्थ आक्षेप	स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती	८४	४०/-
१६१. संस्कार व्यावहारिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में	संपादक-डॉ० ज्वलन्तकुमार शास्त्री	१५२	६०/-
१६२. जीवन का सीधा, सरल और सही मार्ग	अशोक कुमार गुप्त	२१५	१२०/-
१६३. दयानन्दोक्त औषधि आरोग्य सूत्र	डॉ० चन्द्रशेखर लोखण्डे	१५६	१००/-
१६४. कुरान परिचय	देवप्रकाश	१५०४	
१६५. कल्याण मार्ग का पथिक	स्वामी श्रद्धानन्द	२४८	१२०/-
१६६. वेदों पर किये आक्षेप तथा तथा उनका समाधान	डॉ० रघुवीर वेदालंकार	१२८	७०/-
१६७. उपनिषद् (अध्यात्म विद्या) रहस्य ग्यारह उपनिषद्	महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज पण्डित भीमसेन शर्मा	१२०८	३२०/-
१६८. दैवीभाषा प्रकाश	जगदीश प्रसाद	३८८	३००/-
१६९. स्वामी नारायण सम्प्रदाय और मूर्त्तिपूजा	डॉ० भवानीलाल भारतीय	६४	१०/-
१७०. मुगल सम्राज्य का क्षय और उसके कारण	पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति	४८०	३४०/-
१७१. महात्मा नारायण स्वामी का जीवन चरित	महात्मा आर्यमुनि	१०४	१५/-
१७२. सन्तान-निर्माण	स्वामी विवेकानन्द सरस्वती	४०	६/-
१७३. वैदिक वाटिका से चुने पुष्प	ओम प्रकाश भोला	५१६	२२०/-

स्वत्त्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रभाकरदेव आर्य के लिए वर्द्धमान ऑफसेट प्रिन्टर्स, एच-७७, इण्डस्ट्रीयल एरिया, हिण्डौन सिटी (करौली) राज० में मुद्रित एवं श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ-ट्रस्ट ब्यानिया पाडा, हिण्डौन सिटी (राज०) से प्रकाशित।

सम्पादक—**प्रभाकरदेव आर्य**

भारत सरकार पंजीयन नं० RAJBIL/2008/25333 डाक पंजीयन संख्या SWM-RJ-6166

PATANJALI

Prakriti ka Aashirwad

RELISH THE TASTE OF PATANJALI PURE FRUIT JUICE, THE WAY YOU ENJOY THE PULP OF FRUITS

Will you still drink expensive juices with less fruit pulp or drink cheaper Patanjali Fruit Juices with more fruit pulp, for good health and more savings.

Patanjali Juice (1ltr.)	Other Brand Juice (1ltr.)
₹85/-	₹99/- to ₹120/-

Patanjali Mango Drink	Other Brand Mango Drink
₹50/-	₹60/- to ₹65/-

Appeal - A humble request to all the businessmen as well as the consumers. Please give prominence to Patanjali Products in your shops as well as in your hearts. Help us to reach every Indian and contribute in the growth and prosperity of a self - reliant India. Millions of Indians have already joined this movement but millions of Indians are still waiting. Together we can turn the "SWADESHI" dream of Mahatma Gandhi, Bhagat Singh and Ram Prasad Bismil into a reality.

There are more than 500 products of Patanjali Ayurved. These pure edible products and herbal beauty products are available at Patanjali stores as well as other retail outlets.

आवरण : श्रीमहालक्ष्मी; ०९८९९६५९५०३
E-mail : smcolour@gmail.com